।। सत्यनाम ।।

सत्य गुरु कबीर

Satya Guru Kabir

caukā āratī - Special Issue
चौका-आरती विशेषाङ्क

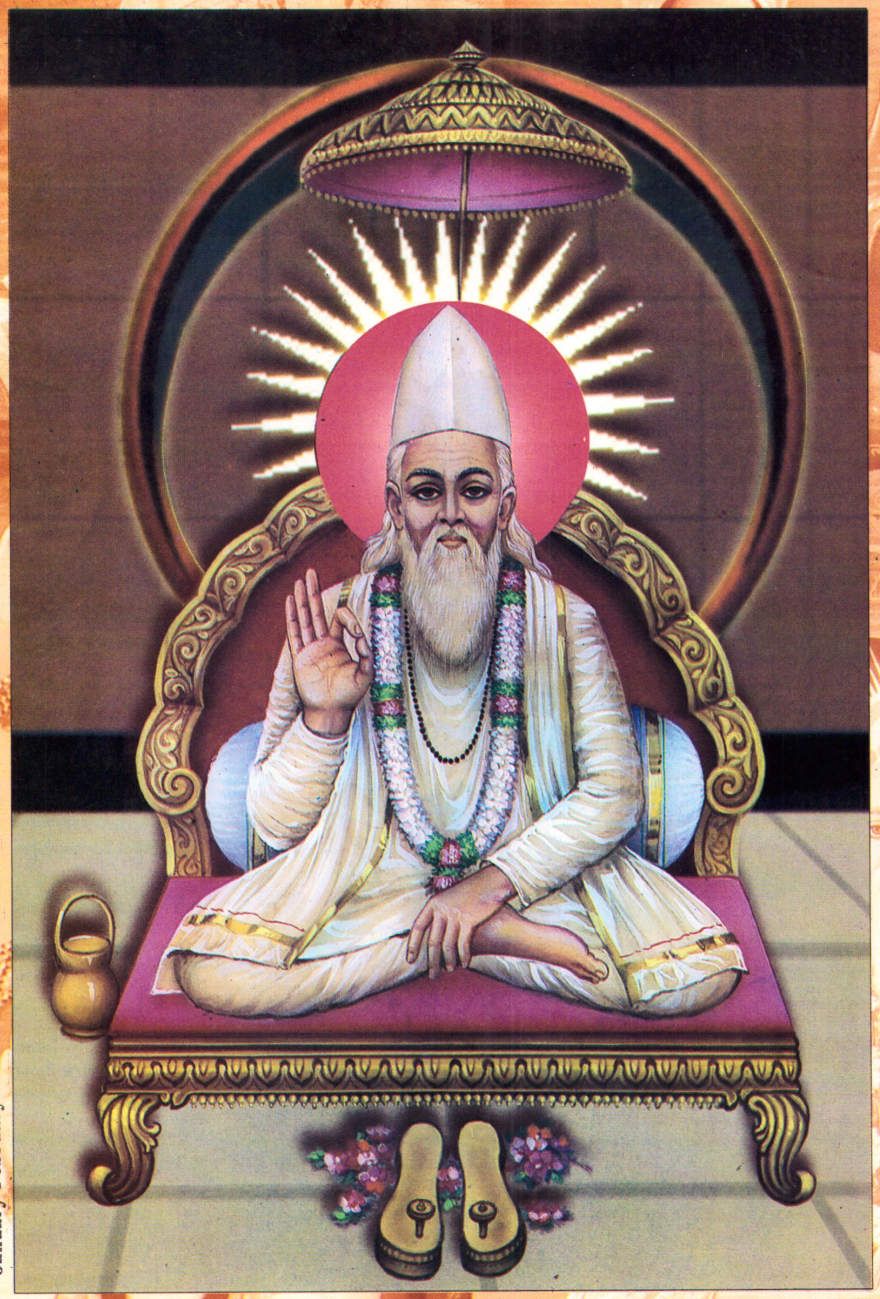

Sonaa sajjana saadhu jana,
tuti jurai sau baara ।

Durjana kumbha kumbhaara kaa,
ekai dhakaa daraara ॥

Gold, broken down in pieces, can be melted back to one piece. Kind and truthful persons after a separation can again be together. But unkind and wicked people, just like an earth pot once broken can never be put together, get permanently separated after a simple dispute.

January-February-March 2004 Vol 2 No.1

◗ Shree Kabir Council – La Caverne, Vacoas ◗ Shree Satya Kabir Muktamaneenaam Dharmic Sabha – Pointe Aux Piments ◗ Shree Mahaprabhu Kabir Dharmasthan – Morcellement St. André

भजन (स्वागत)

गढ़बाँधो एक आमीन बिनवे, कब साहेब मोरे आये हो ।।टेक।।
जब सतगुरु गढ़बाँधो आये, सखियन मंगल गाये हो ।
जब सतगुरु पैयार में आये, आमीन कलश धराये हो ।।१।।
जब सतगुरु मोरे आँगन में आये, मोतियन चौका पुराये हो ।
जब सतगुरु मोरे महल में आये, कनक भण्डार लुटाये हो ।।२।।
चरण पखारि चरणामृत लीन्हा, लेकर पलंग बैठाये हो ।
पान सुपारी नरियर केला, आमीन भेंट चढ़ाये हो ।।३।।
चार खूँट के चौका पोते, बीच धरे परवाना हो ।
करहिं आरती सन्मुख आये, चरणतक भई ठारी हो ।।४।।
लिख परवाना सतगुरु दीन्हा, अजर अमर कर लीन्हा हो ।
कहैं कबीर सुन धर्मनि आमीन, लेहु मुक्ति परवाना हो ।।५।।

आरती

आरति दीन दयाल, साहेब आरति हो ।
आरति गरीब निवाज़ साहेब आरति हो ।।टेक।।
ज्ञान आधार विवेक की बाती, सुरति जोति जहाँ जाग ।।१।।
आरति करूँ सतगुरु साहेब की, जहाँ सब सन्त समाज ।।२।।
दरश-परस गुरु चरण-शरण भयो, टूटि गयो जम जाल ।।३।।
साहेब कबीर सन्तन की कृपा से, पूरण पद परकाश ।।४।।

आरती

आरती कीजै बन्दी छोर समरत्थ की,
चरण शरण सतनाम पुरुष की ।।टेक।।
आरती कर पुहमीं पग धारे, सतयुग में सतनाम पुकारे ।।१।।
आरती कर मुख मंगल गाये, त्रेतानाम मुनींद्र धराये ।।२।।
कर आरती जग पंथ चलाये, द्वापर में करुणामय कहाये ।।३।।
आरती युग-युग बाँधे आशा, कलयुग केवल नाम प्रकाशा ।।४।।
चारों युग धरे प्रगट शरीरा, आरती गावे बंदीछोड़ कबीरा ।।५।।

आरती

कैसे मैं आरति करौं तुम्हारी, महामलिन साहेब देह हमारी ।।टेक।।
छूतहिं से उपजे संसारा, मैं छुतिया गुण गाऊँ तुम्हारा ।।१।।
झरना-झरे दशों-दिशि द्वारा, कैसे मैं आऊँ साहेब निकट तुम्हारा ।।२।।
जो प्रभु देह अग्र की देही, तब हम पायब साहेब नाम सनेही ।।३।।
मलयागिरि पर बसे भुजंगा, विष अमृत रहे एकै संगा ।।४।।
तिनुका तोड़ि दियो परवाना, तब पाये साहेब पद निर्वाना ।।५।।
धनि धर्मदास कबीर बल गाजे, गुरु प्रताप से आरती साजे ।।६।।

भजन (स्वागत)

कोई गुरुजन आये हैं मोरे अँगना, आये मोरे अँगना हो ।।टेक।।
चरण पखारि चरणामृत लीन्हा, देई के सिंहासन बैठाये मोरे अँगना ।।१।।
काहे के खम्भे गड़े हैं मोरे अँगना, काहे के मँड़वा छवाये मोरे अँगना ।।२।।
केले के खम्भे गड़े हैं मोरे अँगना, पतवन के मँड़वा छवाये मोरे अँगना ।।३।।
काहे के चौक पुराये मोरे अँगना काहे के कलश धराये मोरे अँगना ।।४।।
मोतियन चौक पुराये मोरे अँगना, सोने के कलश धराये मोरे अँगना ।।५।।
धर्मदास की आमिनि विनवे, आज तो आनंद भये हैं मोरे अँगना ।।६।।

आरती

जय जय श्री गुरुदेव ।।
पारख रूप कृपालं, मुद मय त्रय कालं ।
मानस साधु मरालं, नाशक भव जालं ।।१।।
कुन्द इन्दुवर सुन्दर, सन्तन हितकारी ।
शांताकार शरीरं, श्वेताम्बर धारी ।।२।।
श्वेत मुकुट चक्रांकित, मस्तक पर सोहे ।
शुभ्र तिलक युत भृकुटि, लखि मुनि मन मोहे ।।३।।
हीरा मणि मुक्तादिक, भूषित उर देशं ।
पद्मासन सिंहासन, स्थित मंगलवेशं ।।४।।
तरुण अरुण कंजाघ्री, जनमन वशकारी ।
तम अज्ञान प्रहारी, नखद्युति अति भारी ।।५।।
सत्य कबीर की आरति, जो कोई गावै ।
भक्ति पदारथ पावै, भव में नहिं आवै ।।६।।

आरती

गुरु जी की आरती, उतारो मन लगाय के ।
प्रेम से आरती उतारो, मन लगाय के ।।टेक।।
पान और फूल से, आरती सजाय ले - २।। गुरु जी की आरती...
प्रेम का दीया है, प्रेम की बाती - २।। गुरु जी की आरती...
आरती करो, सतगुरु साहेब की - २।। गुरु जी की आरती...
साहेब कबीर सब घट माहीं - २।। गुरु जी की आरती...
सुबह और शाम, साहेब के गुण गावो - २।। गुरु जी की आरती...
श्वास-श्वास में साहेब जी का नाम लो - २।। गुरु जी की आरती...
चौका लगाय के, गुरु आसन बैठाय के - २।। गुरु जी की आरती...
आरती की महिमा, कहाँ लगि वर्णौं - २।। गुरु जी की आरती...
साहेब कबीर जी की आरती उतारो - २।। गुरु जी की आरती...

Scheme of Transliteration

अ	a	अं	ṁ	छ	cha	थ	tha	र	ra
आ	ā	अः	ḥ	ज	ja	द	da	ल	la
इ	i	ऋ	ṛ	झ	jha	ध	dha	व	va
ई	ī	ऌ	ḷ	ञ	ña	न	na	श	śa
उ	u	क	ka	ट	ṭa	प	pa	ष	ṣa
ऊ	ū	ख	kha	ठ	ṭha	फ	pha	स	sa
ए	e	ग	ga	ड	ḍa	ब	ba	ह	ha
ऐ	ai	घ	gha	ढ	ḍha	भ	bha	क्ष	kṣa
ओ	o	ङ	ṅa	ण	ṇa	म	ma	त्र	tra
औ	au	च	ca	त	ta	य	ya	ज्ञ	gya

(Contd. from page 7)

डोरी ८

ज्ञान रतन की आँखियाँ, तुम देखो यम के जाल हो ।।टे०।।
यम के फंदा काटो हन्सा, जग तजि होहु निनार ।
सतगुरु दर्शन देंगे, तुम उतरो भवजल पार ।।१।।
जो तुम हन्सा निर्गुण चाहो, सर्गुण करहु विचार ।
निरगुण सरगुण छोड़िके, तुम दोउ तजि होहु निनार ।।२।।
अष्ट कमल दल ऊपरे, भँवर गुफा के घाट ।
सहस पंखुड़ी कमल है, पश्चिम दिशा के बाट ।।३।।
नव खंड हेत विसारो हन्सा, शब्द सुरति चित धार ।
कहैं कबीर धर्मदास सो, तुम उतरो भवजल पार ।।४।।

साखी

नाद संगाती कबीर है, बिन्द हि देह न भार ।
जुग जुग हन्स हिरंबर, नाद उबारन हार ।।८।।

आचार्य महंत संत सर्वेश्वर दास शास्त्री

|| satyanāma ||

Satya Guru Kabir

A Quarterly Journal on the teachings of Sadguru Kabir Saheb.

Kabirābd 605 Pauṣa-Māgha-Phālguna 2060 January-February-March 2004 Vol. 2 No. 1

Founder
M. Komaldass

H. Chief Editor
Acharya Mahant
Sant Sarveshwar Das Shastri
Saahitya-Vyaakaran-Vedaanta Saankhyayogaachaarya-LLB

Editor in Chief
M. Amardass

Board of Editors
Poorundass, Rajiv
M. Ravindradass
M. Prabhatdass

Advisor
Rajnarain

Address
4, Mosque Road
Morcellement St Andre
Plaine des Papayes
Mauritius

P.O. Box 637
Port Louis, Mauritius

Tel. (230) 261 7708
(230) 261 7773

e-mail: satyaguru_kabir@hotmail.com

Subscription
4 yearly issues
Yearly subscription Rs 100.00
Unit Price Rs 25.00

Printed at
Globe Printing, 41, Wellington St.,
Port Louis, Tel/Fax.: 208-1863

साखी - sākhī

निंदक नियरे राखिये, आंगन कुटी छवाय ।
बिनु पानी बिन साबुना, निर्मल करे सुभाव ॥
nindaka niyare rākhiye, āngana kuṭī chavāya |
binu pānī bina sābunā, nirmala kare subhāva ||

Keep your critic close to you; give him shelter in your courtyard. Without soap and water, he cleanses your character.

Commentary :
You get to know your faults if someone criticises you, and so you will have a chance to correct them. Listen to the criticism without annoyance, because the critic is not your enemy, he is in fact helping you to clean the rubbish from your own life.

मानष जन्म दुरलभ है, मिले न बारंबार ।
पक्का फल जो गिर पड़ा, बहुरी न लागे डार ॥
mānuṣa janma durlabha hai, mile na bārambāra |
pakkā phala jo gira paḍā, bahuri na lāge ḍāra ||

Human birth is difficult to obtain, and you will not get it again and again. Once a ripe fruit falls down, it won't be re-attached to its branch.

Commentary :
In this world human life is the best in which you have the opportunity to do good. It is difficult to get the same type of opportunity again and again. If you will not perform proper actions your *karma* will prevent you from getting this chance another time.

साईं इतना दीजिये, जामें कुटुम समाय ।
मैं भी भूखा ना रह, साधु न भूखा जाय ॥
sānyi itnā dījiye, jāmen kuṭuma samāya |
main bhī bhūkhā nā rahun, sādhu na bhūkhā jāya ||

God, please give me only that much, so as to maintain my family. I also will not remain hungry, nor will any *sādhu* go hungry.

Commentary :
In reality, there is no peace without satisfaction and satisfaction does not come with material wealth because the more we get, the more we want. We require only enough for our daily needs. That is why the devotee is only asking for enough to maintain himself, his family and to help others, so that he remains peaceful.

रूखा सुखा खाय के, ठंडा पानी पी ।
देख पराइ चूपड़ी, मत ललचावो जी ॥
rūkhā sukhā khāya ke, ṭhanḍā pānī pī |
dekha parāī cūpaḍī, mata lalacāvo jī ||

Eat dry and simple food, and drink cold water. Do not look at the buttered bread of others and long for it.

Commentary :
You have to try to live a simple life and be satisfied with it. If you try to pursue the luxurious life of others, you will not have peace of mind. Materialism does not bring peace in life. The more a person gets, the more he wants. There is no need to greeds.

Commentary by **Acharya Mahant Jagdish Das Shastri**
Jamnagar, Gujarat, India

No part of this publication may be reprinted or otherwise reproduced without the prior permission from the chief editor.
The opinions and thoughts expressed in the articles published in this journal are those of the writers and not those of the Satya Guru Kabir Committee.

सम्पादकीय

१ सद्गुरु का पूजन, २ संतों की सेवा, ३ सत्यनाम का जप, ४ श्रद्धापूर्वक ज्ञानदायक वचनों का श्रवण, ५ सात्विक चित्त से माया का अभाव, ६ सार और असार तत्त्व का विवेक ७ सत्य का मनसा वाचा कर्मणा आचरण, ८ सभी जीवों के प्रति समदृष्टि एवं ९ शील स्वभाव। इन नवों भक्तियों की तथा अन्य मान्य भक्ति के अंगों की विवेचना करने के उपरांत सद्गुरु कबीर साहेब अपने शिष्य धनी धर्मदास जी से कहते हैं :-

नवद्याभक्ति हीनैस्तु, कार्यारतिर्यथा विधि।
तत्र गुरोः सतां संगो, विधेयो मोक्ष भागिनाम् ॥

(आदि ब्रह्मनिरुपणम् ॥२०४॥)

जो मनुष्य उपरोक्त नवों प्रकार की भक्तियों का समुचित पालन न कर सके या कुछ कर सके; कुछ न कर सके उसे विधि पूर्वक "चौका-आरती" कराना चाहिये। इसमें गुरु, सन्तों एवं सदाचारी भक्तों जो मुक्ति की कामना करते हों (मुमुक्षु) ऐसे लोगों का समागम करना चाहिये।

"कबीर पंथ में जो एक विशेष रूप से धार्मिक विधि की जाती है उसे "चौका-आरती" कहा जाता है, जिसका दूसरा नाम "सात्विक-यज्ञ" भी है।

पंथ में इसका प्रयोग प्रायः (नैमित्तिक, प्रायश्चित आदि) सभी क्रियाओं में किया जाता है। खुशी, गमी आदि की कोई भी विधि इसके बिना सांग नहीं समझी जाती। गृहस्थियों से लेकर मठधरियों तक सभी कोई इसका अनुसरण करते हैं। सारतः पंथ की यह एक सर्व सामान्य विधि है।

इस यज्ञ के मुख्यतः चार भेद हैं। यथाः- १ आनन्दी चौका, २ जन्मोती या सोलह सुत का चौका, ३ चलावा चौका और ४ एकोत्तरी चौका। इनमें से (१) किसी आनन्दोत्सव के निमित्त या दीक्षा ग्रहण के निमित्त जो चौका कराया जाता है उसे आनंदी चौका या आनन्द-आरती कहते हैं। (२) पुत्र जन्म के उपलक्ष्य में या सन्तान-प्राप्ति की कामना से जो चौका कराया जाता है उसे जन्मोती चौका या सोलह सुतकी आरती कहते हैं। (३) किसी परलोक-गत आत्मा की शान्ति-लाभार्थ जो एक विधि कराई जाती है उसे "चलावा चौका" या "चलावा आरती" कहते हैं और (४) जो विधि एक सौ एक पूर्वजों के शान्ति-लाभार्थ की जाती है, उसे "एकोत्तरी चौका" कहा जाता है॥"

(चौका चन्द्रिका से)

श्रीमद् आदि ब्रह्मनिरुपण ग्रन्थ की श्लोक-संख्या २०४ से १४८ तक में इस सात्विक यज्ञ का लघु रूप में वर्णन मिलता है। सत्यलोकवासी पंथ श्री हजूर प्रकाशमणि नाम साहेब (खरसिया) ने इन श्लोकों की टीका करने के क्रम में विशद् रुप से व्याख्या की है जो इस विषय के सभी जिज्ञासुओं के लिए बहुत ही उपयोगी है। इसमें चार गुरुओं की दिशायें, सोलह ब्रह्माशों का वासस्थान एवं पूजा, चारों लग्नों-केतकी, व्याल, जैमुनी, जगपति के लक्षण तथा पाँचों तत्त्वों-आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी के कैसे साक्षात्कार किया जाता है की युक्ति भी वर्णित है, जो सभी कड़िहारों के लिए उपयोगी है।

इस चौका-आरती का फल निरुपित करते हुये कहते हैः-

इमं भक्तिमतं चोक्तं, भावनावान् करोति यः ।
गच्छति स जनो लोकं, तत्र सर्व सुखं लभेत् ॥ आ.ब्र.नि.२४८

सात्विक-यज्ञ को प्रेम एवं भक्ति पूर्वक आयोजन करने वाला मनुष्य निश्चय ही सत्यलोक को प्राप्त करता है और वहाँ पूर्ण परमानन्द का अनुभव करता है। इस आरती का माहात्म्य यह भी है किः- "अजर ज्योति आरती परकाशा। दूत भूत यम मानैं त्रासा॥" अर्थात् जिस घर में यह सात्विक-यज्ञ किया जाता है वहाँ किसी प्रकार के अनिष्टकारी तत्त्व प्रवेश नहीं कर सकते, यम के दूतों का वहाँ प्रवेश सम्भव नहीं होता। क्योंकि सात्विक वातावरण से वे सदा भयभीत रहते हैं। किन्तु जहाँ जिस घर में यह पूजा नहीं होती, वहाँ तो निश्चय ही धर्मराय की मायावी लीलायें अनवरत चलती रहती हैं:-
"जा घर आरती नाहिन साजी। ता घर धर्म राय की बाजी॥"

गत वर्ष २००३ में २४ सितम्बर को वाराणसी के कबीर बाग लहरतारा में जब मैं परम पूज्य वर्तमान पंथ श्री हजूर मुकुन्दमणि नाम साहेब जी से मिला तो "चौका-आरती" विषय पर काफी चर्चा हुई। उन्होंने स्पष्ट किया कि "विधियों के प्रति कट्टरता की अपेक्षा जीवन में सत्य का आचरण मन-वचन कर्म से करना अधिक महत्त्वपूर्ण है।" विधियों में भिन्नता भारत एवं बाहर के अन्य देशों में भी जहाँ कबीर पंथी हैं देखने को मिलता है। किन्तु सभी का भाव भक्ति पूर्वक सद्गुरु की आराधना का ही होता है। इस अंक में साधुओं, भक्तों एवं भजन गयकों के सुविधार्थ चौका आरती में प्रयुक्त होने वाले भजनों (रमैनी, पद, शब्द, आरती, मंगल, डोरी), को प्रकाशित किया जा रहा है। हिन्दी और अंग्रेजी दोनों लिपियों में होने से इसकी उपयोगिता और बढ़ गई है। सहृद् जन इसका लाभ उठावें।

॥ मङ्गलमस्तु सर्वेषाम् ॥

भजन ॥

धुनि सुनि के मनुवा मगन हुआ ।टेक॥
लागि समाधि रहे गुरु चरणन,
अन्तर का दुःख दूर हुआ ॥१॥
सार शब्द की डोरी लागी,
ता चढ़ि हंसा पार हुआ ॥२॥
शून्य शिखर पर झालर झलके,
बरसे अमी रस प्रेम चुवा ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो,
चाखि-चाखि अलमस्त हुआ ॥४॥

bhajana

dhuni suni ke manuvā magana huā || ṭeka ||
lāgi samādhi rahe guru caraṇana,
antara kā duḥkha dūra huā || 1 ||
sāra śabda kī ḍorī lāgī,
tā caḍhi hansā pāra huā || 2 ||
śunya śikhara para jhālara jhalake,
barase amī rasa prema cuvā || 3 ||
kahain kabīra suno bhāī sādho,
cākhi-cākhi alamasta huā || 4 ||

सात्विक आनन्दी चौका आरती

सत्यपुरुषसमारम्भां, कबीराचार्य मध्यमाम् ।
अस्मदाचार्य पर्यन्तां, बन्दे गुरुपरम्पराम् ।।

साखी

सब विधि मुद मंगल करन, हरन अलेश-कलेश ।
सत्यनाम सम नाम नहीं, वरदायक वरदेश ।।
मय मंगल मंगल करन, मंगल रूप कबीर ।
ध्यान धरत नाशत सकल, कर्म जनित भवपीर ।।
गुरु भक्ति अति कीन्हिया, पाँच कीन्ह प्रकाश ।
कर जोरि विनती करुँ, धन्य-धन्य धर्मदास ।।
अंश-बंश सब सन्त गुरु, भये आहि और आम ।
सबको मेरी बन्दगी, बार-बार करुँ याम ।।
गुरु मूरति गति चन्द्रमा, सेवक नैन चकोर ।
आठ प्रहर निरखत रहूँ, गुरु मूरति की ओर ।।
अमी समान आप हो, अमी सम वचन तुम्हार ।
दाया कीजै दास पर, निर्भय शब्द उचार ।।

भजन (स्वागत)

आये एक दीनदयाल, दयाकरि साहेब आये हो ।।टेक।।
आव-भाव से घर पोताये, आँगन धूरि बहाये हो ।
मोतियन चुनि-चुनि चौक पुराये हो, साधू बैठे भरपूर ।।
भजो मोरे साहेब आये हो . . . ।।१।।
श्वेत ही आसन श्वेत सिंहासन, श्वेत ध्वजा फहराये हो ।
खसम धनी गुरु बैठे ही तट पर, सतसुकृत लेई आये ।
भजो मोरे साहेब आये हो . . . ।।२।।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, एक ही नाम जग सारा हो ।
एक नाम बिनु पार न पइहो, डूब मरे संसार ।।
भजो मोरे साहेब आये हो . . . ।।३।।

पद (उत्सव)

आज मोरे सतगुरु आये मिजमान। तन मन धन सब करूँ कुरबान ।।
प्रेम को पलंग दियो है बिछाय। चरणपखारि चरणामृत पाय ।।१।।
भावसहित भोजन परसाद। तुरत करूँ कछु लागे न बार ।।२।।
प्रेम की पटरी सुरत की डोर। आज मोरे साहब झुलत हिंडोर ।।३।।
साहब आये मैं फुली न समाऊँ। देख दिदार मगन हो जाऊँ ।।४।।
काह कहूँ कछु वर्णिन न जाय। तीन लोक पासँग में जाय ।।५।।
धर्मदास आमिन समुझाय। भक्ति करो तुम सुरति लगाय ।।६।।
कहैं कबीर सुनो धर्मदास। केवल नाम गहो विश्वास ।।७।।

साखी

गुरु को मानुष जो गिनै, चरणामृत को पान ।
ते नर चौरासी फिरैं, भटकें चारों खान ।।

शब्द

गुरु दरियाव नहाना हो जासे दुरमति भागे।
गुरु दरियाव सदा जल निर्मल, पैठत उपजत ज्ञाना हो ।।
जब लगि गुरु दरियाव न पावे, तब लगि फिरत भुलाना हो ।।
कोटिन तीरथ गुरु के चरनन, श्रीमुख आप बखाना हो ।।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, अजर अमर घर जाना हो ।।

शब्द न. 3 (चरणामृत लेने का)

जिनको चरणामृत लीजे। ताहे गारी काहे को दीजे हो ।।टे०।।
संसार जाल है भारी। मोरे साधुन की गति न्यारी हो ।।१।।
वे तो काम क्रोध मद माते। ताते बांधे यमपुर जाते हो ।।२।।
ये तो लोभ मोह भरमावै। ताते हीरा हाथ न आवे हो ।।३।।
जासे मुक्ति पदारथ पाइये। ताके हिरदे माहि समाये हो ।।४।।
अस कहैंहि कबीर विचारी मोहे। साधु सँगत लगे प्यारी हो ।।५।।

साखी

गुरु को मानुष जानते, ते नर कहिये अंध ।
लख चौरासी भटकते, पड़ते यम के फंद ।।

साखियाँ (ज्योति प्रकाशन)

अनहद बाजा बाजिया, ज्योति भई परकाश ।
जन कबीर अन्दर खड़े, स्वामी सनमुख दास ।।१।।
बाजा-बाजा रहित का, पड़ा नगर में शोर ।
सतगुरु खसम कबीर हैं, नजर न आवै और ।।२।।
झलके ज्योति झिलमिली, बिन बाती बिन तेल ।
चहुँ दिशि सूरज ऊगिया, ऐसा अद्‌भुत खेल ।।३।।
जागृत रूपी रहत हैं, सत मत गहिर गँभीर ।
अजर नाम विनशे नहीं, सोऽहं सत्त कबीर ।।४।।
पद सेती परिचय करो, यह निज सुरति लगाय ।
कहैं कबीर धर्मदास सो, आवा गमन नसाय ।।५।।

प्रेम से बोलिये सद्‌गुरु कबीर साहेब की जय . . . (३)

साखी

धर्मदास बिनती करे, सुनगुरु कृपानिधान ।
जरामरण दुःख मेटिके, दीजिये पद निर्वाण ।।

रमैनी १

प्रथमहि मंदिर चौक पुरावा। उत्तम आसन श्वेत बिछावा ।।१।।
हंसा पग आसन पर दीन्हा। सत्य कबीर कही कही लीन्हा ।।२।।
नाम प्रताप हंस पर छाजे। हंसहि भार रती नहि लागे ।।३।।
भार उतार आप सिर लीन्हा। हंस छुड़ाय काल सो दीन्हा ।।४।।
साधु संत मिलि बैठे आई। बहु विधि भक्ति करे चितलाई ।।५।।
पान सुपारी नरियर केरा। लौंग लायची किसमिस मेवा ।।६।।
सवा शेर आनो मिष्ठाना। सत्त सवा सौ उत्तम पाना ।।७।।
सात हाथ बस्तर परमाना। सो सतगुरु के आगे आना ।।८।।
धन्य संत जिन आरती साजा। दुःख दारिद्र वाके घर सोभागा ।।९।।
कहें कबीर सुनो धर्मदासा। वोहं सोहं शब्द प्रकाशा ।।१०।।

साखी

चन्दन चौका कीजिये, मलियागिर को नाम ।
चारों कंवल सुधार हुँ, मध्य ताहि के धाम ।।

रमैनी २

अगर चंदन घसि चौकादीन्हा। आदि नाम का सुमिरण कीन्हा ।।१।।
जब सों धनी मन चितवन कीन्हा। चौका सेत हंस करि लीन्हा ।।२।।
धर्मदास चौका है सारा। चौका बैठे पुरुष पियारा ।।३।।
साधु संत मिलि बैठो आई। सुरति निरति सों शब्द लौलाई ।।४।।
कहाँहि कबीर शब्द जो ध्यावे। शब्दहिं में पुनि दर्शन पाये ।।५।।

साखी

चौका चार सुधार हूँ, चार कँवल अस्थान ।
चारों पवन उरेहि के, देखो तत्व अमान ॥

रमैनी ३

आदि नाम चित चेतहु भाई। आरति साजहु ज्योति बराई ॥१॥
पाट पिताम्बर अम्बर छाई। जहवां हंस करें गवनाई ॥२॥
श्वेत सिंहासन अगम अपारा। सत सुकृत जहवां पगु धारा ॥३॥
भागा तिमिर भया परकाशा आदि ज्योति कीन्हा रहिवासा ॥४॥
श्वेत सरूप शब्द है भाई। अग्रवास में रहै समाई ॥५॥
कहैं कबीर निज भेद हमारा। सत्त शब्द गहि उतरो परा ॥६॥

साखी

जो रचना है लोक की, सो चौका विस्तार ।
की बैठे निजवंश सुत, की पूरा कंडिहार ॥

रमैनी ४

कदली दल उत्तम विस्तारा। अति सुन्दर साजो पनवारा ॥१॥
सुघर मिठाई उत्तिम पाना। नरियर अंस लेहु पहिचाना ॥२॥
सात पांच नरियर मो नाही। ताहि जीव की गहो जिन बाही ॥३॥
सात पांच नरियर मो रेखा। संपुट गुप्त प्रगट हो देखा ॥४॥
सवा सेर आनों मिष्टाना। सत्त सवा सौ उत्तम पाना ॥५॥
सात-हाथ बस्तर परमाना। सो सतगुरु के आगे आना ॥६॥
इतना होय अवर नहि भाई। जासो काल दगा मिट जाई ॥७॥
लक्ष जीव नित करत अहारा। ताते थापेउं यह बेवहारा ॥८॥
और भेद सब राखो गोई। मत सुनि के जीव विचले सोई ॥९॥
सतगुरुशरण जीव जो आवे। ताको काल सदा शिर नावे ॥१०॥
कहैं कबीर सुनो धर्मनि नागर। बीरा नाम सों हंस उजागर ॥११॥

साखी

कलश आरती दल शिला, नरियर पान मिष्ठान ।
पूंगी फल लौंग लायची, शब्द भजन धुन ध्यान ॥

रमैनी ५

सत बारी से फूल मँगावा। सत सुकृत को आनि चढ़ावा ॥१॥
पुष्प की बास भई अघ्रानी। आदि नाम तब ही पहिचानी ॥२॥
तिहि के मध्य अधिक सुखधारा। तेहि सुमिरण से हंस उबारा ॥३॥
मन वच कर्म सुमिर जो कोई, ताको आवागमन न होई ॥४॥
श्वेत कमल का परिमल होई। निरखी देखु जगत गुरु सोई ॥५॥
कहैं कबीर भेद सुनु मोरा। अगर वास महके चहुं ओरा ॥६॥

साखी

पुहुप द्वीप पर बैठ के, सुख सागर अस्थान ।
आप द्वीप रहिवास है, मूल करी परमान ॥

रमैनी ६ 'आरती (आरती महात्म्य)

धर्मदास मानो उपदेशा। सत्य पुरुष का सुनहु संदेशा ॥१॥
धर्मदास मानो चित लाई। रहो ठिका पर उचट न जाई ॥२॥
आरती अजर करहु बनाई। निर्भय हंस लोक को जाई ॥३॥
कोटिन ज्ञान कथे नर लोई। बिना आरती बचे नहिं कोई ॥४॥
जा घर आरती नाहिन साजी। ता घर धर्मराय की बाजी ॥५॥
अजर ज्योति आरती परकाशा। दूत भूत यम मानैं त्रासा ॥६॥
कहैं कबीर सुनो धर्मदासा। हंसा पावे लोक निवासा ॥७॥

साखी

कहैं कबीर धर्मदास सो, शब्द न खाली होय ।
तुमहि छोड़ि औरन गहे, सो जिव जाय बिगोय ॥

रमैनी ७ (विनय)

दर्शन देहु गुरु नाम सनेही। तुम बिनु दुख पावे मेरी देही ॥१॥
अँन नहि भावे नींद न आवे। बार-बार मोहि बिरह सतावे ॥२॥
घर अंगना मोहि कुछ न सुहावे। विरह भयो तन रहि नहि जावे ॥३॥
नयना नीर बहे जल धारा। निसदिन पन्थ निहारुँ तुम्हारा ॥४॥
जैसे मणि बिन फणि बिकराला। ऐसे तुम बिन हाल हमारा ॥५॥
जैसे चातक स्वाति की आशा। ऐसे तुम बिन मरौं पियासा ॥६॥
जैसे मीन मरे बिन नीरा। ऐसे तुम बिन दुखित शरीरा ॥७॥
हौ साहब तुम दीन दयाला। केही कारण अब मोहि बिसारा ॥८॥

साखी

विनवत हूँ कर जोरि के, सुन गुरु कृपा निधान ।
सन्तन को सुख दीजिये, दया गरीबी ज्ञान ॥
प्रेम से बोलिये सद्गुरु कबीर साहेब की जय . . . (३)

शब्द (आरती)

मंगल रूप होय आरती साजे। अभय निशान ज्ञान धुन गाजे ॥टे०॥
अछय विरछ जाकी अंमर छाया। प्रेम प्रताप अमृत फल पाया ॥१॥
निशि वासर जहँ पूरन चन्दा। परम पुरुष तहँ करत अनंदा ॥२॥
तन मन धन जिन अरपन कीन्हा। परम पुरुष परमातम चीन्हा ॥३॥
जरा मरण की सँशय मेटो। सुरति सन्तायन सतगुरु भेंटो ॥४॥
कहैं कबीर हिरम्बर होई। निरखि नाम निज चीन्हे सोई ॥५॥

आरती २

जय जय सत्य कबीर ।।
सत्यनाम सत सुकृत, सतरत हत कामी ।
विगत क्लेश सत धामी, त्रिभुवन पति स्वामी ॥१॥
जयति जयति कबीरं, नाशक भव भीरम् ।
धार्यो मनुज शरीरं, शिशुवर सर तीरम् ॥२॥
कमल पत्र पर शोभित, शोभाजित कैसे ।
नीलाचल पर राजित, मुक्तामणि जैसे ॥३॥
परम मनोहर रूपं, प्रमुदित सुख-राशी ।
अति अभिनव अविनाशी, काशी पुरवासी ॥४॥
हंस उबारन कारण, प्रगटे तन धारी ।
पारख रूप बिहारी, अविचल अविकारी ॥५॥
साहेब कबीर की आरति, अगणित अघहारी ।
धर्मदास बलिहारी, मुद मंगलकारी ॥६॥

आरती अर्पण-साखी

आरति लेहु गोसाईं जी, जो होवे मम काज ।
तन मन धन न्योछावरी, सुख सम्पति कुलराशि ॥
सत्यनाम की आरती, निर्मल भया शरीर ।
धर्मदास सत्यलोक गये, गुरु बहिंया मिले कबीर ॥
प्रेम से बोलिये सद्गुरु कबीर साहेब की जय. . . (३)

नारियल मोरना-साखी

धर्मदास उनमुनि बसो, करहु जो शब्द को जाप ।
सार शब्द सुमिरण करो, मुनिवर मरत पियास ॥
सार शब्द शिखर पर, मूल ठिकाना सोई ।
बिन सद्गुरु पावै नहीं, लाख कथै जो कोई ॥
वेद थके ब्रह्मा थके, थाके मुनिवर देवा ।
कहैं कबीर सुनो साधवा, करो सतगुरु की सेवा ॥

साखी

कलश आरती दल शिला, चारों अंक सुधार ।
रेखा लिख तापर शिला, तहाँ कपूर प्रकाश ॥
अंश रेख सुर सीख को, गुरु स्वासा धर एक ।
तामों नरियर मोरहू, टूटे विघ्न अनेक ॥

मंगल (बनजारन)

बनजारन विनती करै, सुन साजना ।
नरियर लीन्हो हाथ, सन्त सुन साजना ॥१॥
बिना बीज को वृक्ष है, सुन साजना ।
बिन धरती अंकूर, सन्त सुन साजना ॥२॥
जाको मूल पताल है, सुन साजना ।
नरियर शीस अकाश, सन्त सुन साजना ॥३॥
डँडिया पाँच पचीस है, सुन साजना ।
तीन जनी सिरदार, सन्त सुन साजना ॥४॥
बिना भेद जिन मोरह, सुन साजना ।
जीव इकोत्तर हान, सन्त सुन साजना ॥५॥
गुरु के शब्द लै मोरह, सुन साजना ।
यम शिर मरदन हार, सन्त सुन साजना ॥६॥
सखियाँ पांच सहेलरी, सुन साजना ।
नव नारी विस्तार, सन्त सुन साजना ॥७॥
कहैं कबीर बघेल से, सुन साजना ।
रानी इन्द्रमती सिरताज, सन्त सुन साजना ॥८॥

शब्द (भोग लगाने का)

सत्त पुरुष को भोग लागे। सींगी शब्द अनाहद बाजै ।।टे०।।
कदलि पत्र साजो पनवारा। शीतल शब्द ज्योति उजियारा ।।१।।
नरियर मोर खुरोरी कीन्हा। आदि नाम अन्तर घट चीन्हा ।।२।।
सुघर मिठाई मधुर मिठाई। प्रीति भाव से सन्त बुलाई ।।३।।
लौंग लायची किसमिस केरा। मधुर मधुर रसदाख घनेरा ।।४।।
सुखसागर के निरमल नीरा। जापर सतगुरु तृपत शरीरा ।।५।।
सत्त पुरुष को अर्पण कीन्हा। शंख शब्द धुन बाजे बीना ।।६।।
सो परसाद दास को दीन्हा। जाते काल भयो है अधीना ।।७।।
पान प्रसाद जीव जो पावे। अंकुरि हंसा सतलोक सिधावे ।।८।।
ऐसा भेद करो परकाशा। सत्य शब्द मानो विस्वासा ।।९।।
कहैं कबीर सुनो धर्मदासा। वीरा नाम करो परकाशा ।।१०।।

शब्द (अचवन का)

अचवन कीजे गुरु कृपानिधान ।।टे०।।
सेवक लिये प्रेम जल झारी, खरिचा ब्रह्म गियान।।१।।
भाव भगति से बीरा लीजे, सन्तन जीवन प्राण।।२।।
अमी उगार दास को दीजे, जन को परम कल्याण।।३।।
हृदय कमल बिच पलंग बिछायो, पौढ़े पुरुष पुराण।।४।।
चरण कमल की सेवा करिहों, दासातन परमाण।।५।।
सुरति के बिजना डुलाऊँ मैं ठाढ़ो, एक टक लागो ध्यान।।६।।
धर्मदास पर दया कीजे, पूरण पद निरवाण।।७।।

साखी

खरिचा अचवन लेईके, एकटक सुमिरो ध्यान ।
कहैं कबीर धर्मदास सो सोहं शब्द निर्वाण ॥
सोहं शब्द सो काज है, सुनो सन्तमति धीर ।
सोहं डोरी सतलोक गये, सतगुरु कहैं कबीर ॥
प्रेम से बोलिये सद्गुरु कबीर साहेब की जय . . . (३)

शब्द (तिनुका अर्पण का)

जमुनिया की डार साहेब तोड़ दीजे।।टे०।।
एक जमुनिया की चौदह डार, सार शब्द लै तोड़ दीजे हो ।।१।।
सुरति हमारी अजब पियासी, प्रेम अमीरस घोर दीजे हो ।।२।।
गुरु हमारे ज्ञान जौहरी, हीरा पदारथ तौल दीजे हो ।।३।।
यह संसार विषय रस माते, भरम किंवरिया खोल दीजे हो ।।४।।
धर्मदास की अरज गुसांई, जीवन के बन्द छुड़ा दीजे हो ।।५।।

शब्द (कंठी का)

पायो निज नाम गले को हरवा ।।टे०।।
सतगुरु पटवा अजब लहरवा । छोटी मोटी डोलिया में चार कहरवा ।।१।।
प्रेम प्रीति की पहिरि चुनरिया । निहुरि नचो साहब दरबरवा ।।२।।
सतगुरु कुंजी दई महल की । जब चाहो तब खोल किवड़वा ।।३।।
यही मेरी ब्याह यही मेरोगवना । कहैं कबीर बहुरि नहि अवना ।।४।।

शब्द (नाम सुनाने का)

गुरु पैयाँ लागो नाम लखाय दीजे हो ।।टे०।।
जुगन जुगन का सोयल मनुवा । दे सत शब्द जगाय दीजे हो ।।१।।
घट अंधियार कछू नहि सूझे । ज्ञान की दृष्टि बताय दीजे हो ।।२।।
विष की लहर उठे घट भीतर । अमृत बूँद चुवाय दीजे हो ।।३।।
गहरी नदिया नाव पुरानी । खेई के पार लगाय दीजे हो ।।४।।
धर्मदास की अरज गुसांई । जीवन बन्द छुड़ाय दीजे हो ।।५।।

पान परवाना साखी

एक पान बरइन के, हाटों हाट बिकाय ।
एक पान सतगुरु दिये, अमरलोक लिये जाय ॥

शब्द-भजन (पान-परवाना)

सतगुरु पान बिचारें हो, हंसा कर लेहु ना उबार ।।टेक।।
कोई मोरे लावे लवँगिया हो, कोई मोरे लावेला पान ।
काई मोरे लावे सुख नरियर हो, नरियर मोरे प्राण ।।१।।
साहेब कबीर लावे लवँग हो, धर्मदास लावे पान ।
माई आमिनि लावे सुख नरियर हो, नरियर मोरे प्राण ।।२।।
कौन बेरिया पैबो लवँग हो, कौन बेरिया पैबो पान ।
कौन बेरिया पैबो सुख नरियर हो, नरियर मोरे प्राण ।।३।।
चलन के बेरिया पैबो लवँग हो, बैठन के बेरिया पान ।
पूजा के बेरिया पैबो सुखनरियर हो, नरियर मोरे प्राण ।।४।।
कैसे के सींचब लवँग हो, कैसे के सींचब पान ।
कैसे के सींचब सुख नरियर हो, नरियर मोरे प्राण ।।५।।
नीर से सींचब लवँग हो, अमीरस सींचब पान ।
दूध से सींचब नरियर हो, नरियर मोरे प्राण ।।६।।
हमरे के दो-दो बलकवा हो, हमहीं तो आदि अन्त ।
साहेब कबीर गुरु के मंगल हो, गावें लें धर्मदास ।।६।।

परिशिष्ट

(रमैनी-आनन्द आरती)

रमैनी १

धर्मदास तुम पंथ उजागर। अरपो दल पहुँचो सुखसागर ।।१।।
चंदन चौका रचहु बनाई। सतसकृत जहाँ बैठे आई ।।२।।
सत बारी के फूल मंगावा। सो सतगुरु को आन चढ़ावा ।।३।।
धर्मदास उठि बिनती कीन्हा। हो सतगुरु हम तुमको चीन्हा ।।४।।
जो तुम कहो मानि लेउँ सोई। तुम गुरु छोड़ और नहि कोई ।।५।।
कहँहि कबीर सुनो धर्मदासा। वीरा नाम करो परकाशा ।।६।।

साखी

लौंग इलायची नारियर, आरति धरो लिसाय ।
कहैं कबीर धर्मदास सो, काल दगा मिट जाय ॥

रमैनी २

धर्मदास तुम बीरा लेहू। जंबूद्वीप के जीवन देहू ।।१।।
मैं का जानौं पंथ की आदि। जंबूद्वीप बसैं बकवादी ।।२।।
पढ़े वेद और करैं अचारा। वे नहि मानैं शब्द तुम्हारा ।।३।।
जो नहि माँनै शब्द हमारा। सो चली जैहैं जम के द्वारा ।।४।।
जो कोई मानै शब्द हमारा। वो चलि ऐहैं लोक मँझारा ।।५।।
अन्तर कपट करै मन मांही। ताकी लोक बदी नहि भाई ।।६।।
कहैं कबीर सुनो धर्मदासा। वोहं सोहं शब्द प्रकाशा ।।७।।

साखी

अंश रेख सुर सीख को, गुरु स्वासा धर एक ।
तामों नरियर मोरहू, टूटे विघ्न अनेक ॥

रमैनी ३

उग्र ज्ञानका कहौं संदेशा। धर्मदास मानो उपदेशा ॥१॥
धर्मदास मानो चित्त लाई। रहो ठिका पर उचट न जाई ॥२॥
अजर लोक में आरति कीन्हा। सो आरति हम तुमको दीन्हा ॥३॥
जा घर आरति नाहि न साजी। ता घर धर्मराय की बाजी ॥४॥
जा घर आरती करहु बंनाई। निर्भय हंस लोक को जाई ॥५॥
कोटिन ज्ञान कथे नर लोई। बिन आरति बचे नहि कोई ॥६॥
अजर जोति आरति परकाशा। दूत भूत जम माने त्रासा ॥७॥
कहैं कबीर सुनो धर्मदासा। हंसा पावे लोक निवासा ॥८॥

साखी

कलश आरती दल सिला, नरियर पान मिष्ठान ।
पूँगी फल लौंग लायची, शब्द भजन धुन ध्यान ॥

(शब्द-आनन्द उत्सव के)

शब्द १

भजन में होत आनन्द आनन्द।
बरसत शब्द अमी के बादल, भींजत हैं कोई सन्त ।टे०॥
रोम रोम अमी अन्तर भीजें, पारस परसत अंग ।
गहो निज नाम त्रास तन नाही, साहब हैं तेरे संग ॥१॥
अग्रवास जहाँ तत्व की नदिया, मानो अठारह गंग ।
करि असनान मगन हो बैठे, चढ़त शब्द को रंग ॥२॥
स्वासा सार रचो मेरे साहब, जहाँ न माया मोहंग ।
कहँहि कबीर सुनो भाई साधो, जपहु सोहंग सोहंग ॥३॥

शब्द २

अब हम आनन्द के घर पायो।
जब से दया भई सतगुरु की, अभय निशान घुमायो ।टे०॥
काम क्रोध की गागर फोरी, ममता नीर बहायो ।
तजि परपंच वेद विधि किरिया, चरन कमल चित लायो ॥१॥
पाँच तत्व की या तन गुदड़ी, ममता टोभ लगायो ।
हद घर छोड़ बेहद घर आसन, गगन मंडल मठ छायो ॥२॥
चाँद न सूर्य दिवस नहि रजनी, तहाँ जाई लार लरायो ।
कहैं कबीर कोइ पिया की पियारी, पिया पिया रट लायो ॥३॥

शब्द ३

गुरुजी मोहे बहुत निहाल किये ।टे०॥
नाम को कंठी गल बीच डारी, सिर पर छत्र दिये ।
कर्महि काटि किये गुरु निर्मल, उज्वल हंस किये ।१॥
भवसागर में डूबत देखो, जम से राखि लिये ।
कहें कबीर सुनो भाई साधो, जाय निसान दिये ।२॥

शब्द ४

अब हम सोई परम पद जाना ।टे०॥
ना वहाँ सिद्ध नहिं वहाँ साधक, दूसरे कहत दिवाना ।
ना वहाँ चन्दा ना वहाँ सूरज, ना रजनी ना भाना ॥१॥
मकरी तार स्वेत है झीनो, तहाँ मेरो मन माना ।
कहैं कबीर चींटी के खुर में, पिंड ब्रह्मण्ड समाना ॥२॥

(मंगल-आनन्द उत्सव के)

मंगल १

चल सतगुरु के हाट, ज्ञान बुधि लाइये ।
लीजे साहब को नाम, परम पद पाइये ॥१॥
साहब सब कछु दीन्ह, देवन कछु ना रह्यो ।
तुमहि अभागिन नार, अमृत तज विष पियो ॥२॥
गई थी पिया के महल, पिया संग ना रची ।
हिरदे कपट रहो छाय, कुमती लज्जा बसी ॥३॥
जो गुरु रूठे होय, तो तुरत मनाइये ।
हो रहु दीन अधीन, चूक बकसाइये ॥४॥
सतगुरु दीन दयाल, दया दिल हेरहीं ।
कोटि करम कटि जाय, पलक चित फेरहीं ॥५॥
भलो बनो संजोग, प्रेम को चोलना ।
तन मन अरपो शीस, साहब हँसि बोलना ॥६॥
कहैं कबीर समुझाय, समुझि हिरदे धरो ।
जुगन जुगन करो राज, सो दुरमति परिहरो ॥७॥

मंगल २

सतगुरु दीनदयाल, काल भय मेटिया ।
पायो दीप ज्ञान, अमर वर भेटिया ॥१॥
जो कुछ देखा चाहों, चलो सत संग में ।
उन से करहु सनेह, मिलो उस रंग में ॥२॥
अविगत अगम अभेव, अखंडित पूर है ।
झिलमिल झिलमिल होय, सदा वह नूर है ॥३॥
इंगला पिंगला साध, यही एक ख्याल है ।
चन्द्र भानु गम नाहि, तहाँ मेरा लाल है ॥४॥
कहैं कबीर समुझाय, समुझ नर बावरा ।
हंस गये सतलोक, उतरि भव-सागरा ॥५॥

मंगल ३

अखंड साहेब को नाम और सब खंड है।
खांडित मेरु सुमेरु, खांड ब्रह्मण्ड है ॥१॥
थिर न रहे धन धाम, सो जीवन दुन्द है ।
लख चौरासी के जीव, परे यम फन्द है ॥२॥
जिनको साहब सों हेत, सोई निरबन्ध है ।
उन सन्तन के संग, सदा आनन्द है ॥३॥
चंचल मन थिर राख, तबै भल रंग है ।
उलट निकट भर पीव, सो अमृत गंग है ॥४॥
दया भाव चित्त राख, तो भक्ति को अंग है ।
कहैं कबीर चित चेत, सो जगत पतंग है ॥५॥

मंगल ४ (पूरणमासी)

पूरणमासी आज, तो मंगल गाइये ।
सतगुरु चरण मनाय, परम पद पाइय ॥१॥
प्रथमहि मन्दिर झार, तो चन्दन पुताइय ।
नूतन बस्तर आन, चंदेवा तनाइये ॥२॥
गजमोतियन के चौक, सो तहां पुराइये ।
मेवा अरु मिष्टान्न, बहुत विधि लाइये ॥३॥
गउ घृत पकवान, सो धोती उढ़ाइये ।
पालव सहित जु कलशा, तहाँ धराइये ॥४॥
पाँच ज्योति को दीपक, तहाँ बराइये ।
गुरु के हेतु सो आसन, तहाँ बिछाइये ॥५॥
गुरु के चरण परिवार, तहाँ बैठाइये ।
साधु सन्त संग लाय, तो आरती उतारिये ॥६॥
आरती करि पुनि नरियर, तहाँ मोराइये ।
पुरुष को भोग लगाय, सखा मिलि पाइये ॥७॥
पाय प्रसाद अघाय, चरण चित्त लाइये ।
जुगन जुगन को क्षुधा, सो तुरत बुझाइये ॥८॥
अति अधीन होय प्रेम सो, गुरु ही रिझाइये ।
कहैं कबीर सतभाव सो, लोक सिधाइये ॥९॥

सात्विक चलावा चौका आरती

साखी

आये है सो जायँ, राजा रंक ककीर।
एक सिंहासन चढि चले, एक बँधि जात जँजीर॥

शब्द (चलावा के)

डोरी १

शब्द सिंहासन पाट में, तुम हंसा बैठो आय हो ॥टे०॥
कौन नाम मुक्तामणि, कौन नाम वे अंश ।
कौन नाम वे पुरुष हैं, कौन नाम वे हंस ॥टे१॥
अजर नाम मुक्तामनि, उग्र नाम वे अंश ।
ज्ञानी नाम वे पुरुष हैं, सुरति नाम वे हंस ॥२॥
मूल द्वीप निज द्वीप है, और सुनी हम पाह ।
बैठे हंस उबारहीं, सोहंगम के बाँह ॥३॥
जम्बू द्वीप के हंसा भाई, पांजी बैठे आय ।
कहैं कबीर धर्मदास सो, तुम लावहु बाँह चढ़ाय ॥४॥

साखी

हंसा छूटे बाज ज्यों, कोटि सिंह का जोर ।
सुमिरण दीन दयाल का, पहुँचि गया निज ठौर ॥१॥

डोरी २

अबकी बेर उबारिये, मेरी अरजी दीनदयाल हो ॥टे०॥
आई थी वहि देश से, भई परदेशी नार ।
वह मारग में भूलिया, बिसरि गई निज नाह ॥१॥
जुगन जुगन भरमत फिरी, यम के हाथ बिकाय ।
कर जोरे बिनती करौं, मोहि मिलके बिछुरि मत जाय ॥२॥
विषम नदी विकराल है, वोहित करिया धार ।
मोह नगर के घाट में, खाये सुर नर झार ॥३॥
शब्द जहाज कबीर का, सतगुरु खोवनहार ।
कोई कोई हंस उबारहीं, पल में लेहिं छुड़ाय ॥४॥

साखी

चली जो पुतरी लोन की, थाह सिंधु को लेन ।
आपुहि गलि पानी भई, उलटि कहे को बैन ॥२॥

डोरी ३

नाम सनेह न छाड़िये, भावे तन मन धन जरि जाय हो ॥टे०॥
पानी से पैदा किया, नख शिख सीस बनाय ।
वह साहेब को बिसारिया, तेरो गाढ़ो होत सहाय ॥१॥
महल चुने खाई खने, ऊँचे ऊँचे धाम ।
जब यम बैठे कंठ में, तेरे कोई न आवे काम ॥२॥
मात-पिता सुत बांधवा, और दुलारी नार ।
यह सब हिलमिल बीछुरे, तेरी शोभा है दिन चार ॥३॥
जैसी लागी ओर से, दिन दिन दूनी प्रीति ।
नाम कबीर न छाड़िये, भावे हार होय की जीत ॥४॥

साखी

उनमुनि चढ़ि अकाश में, गई गगन में छूट ।
हंस चलावा जात है, काल रहा सिरकूट ॥३॥

डोरी ४

कौन मिलावे जोगिया, जोगिया बिन रहो न जाय हो ॥टे०॥
हौं हिरनी पिय पारधी, मारा शब्द का बान ।
जाहि लगे सोइ जानिया, और दरद नहिं जान ॥१॥
पिय कारण पियरी भई, लोग कहें तन रोग ।
जप तप लंघन मैं करौं, पिया मिलन के जोग ॥२॥
हूँ तो पियासी पीव की, रटौं सदा पिव पिव ।
पिया मिलैं तो जीय हौं, ना तो त्यागौं जीव ॥३॥
कहैं कबीर सुन जोगिनी, तन ही में मन ही समाय ।
पिछली प्रीति के कारणे, जोगी बहुरि मिलेंगे आय ॥४॥

साखी

अस वीरा परताप बल, प्रबल काल ते होय ।
जिहि सतगुर बहियाँ मिले, हंस न जाय बियोग ॥४॥

डोरी ५

हंसा दुरमति छोड़ि दे, तुम निरमल होय घर आव हो ॥टे०॥
दूध हि से दधि होत है, दधि मथि माखन होय ।
माखन से घृत होत है, बहुरि न छाछ समोय ॥१॥
ऊखहि से गुड़ होत है, गुड़ से होत है खाँड़ ।
सतगुरु मिल मिसरी भये, बहुरि न ऊख समोय ॥२॥
खाँड़ जो बगरी रेत में, गजमुख चूनि न जाय ।
जाति बरन कुल खोय के, चींटी होय चुनि खाय ॥३॥
दाग जो लागा नील का, नव मन साबुन धोय ।
कोटि जतन परबोधिये, कागा हंस न होय ॥४॥
कहैं कबीर सुन केशवा, तेरी गति अगम अपार ।
बाप बिनोरा हो रहे, पूत भये चौ तार ॥५॥

साखी

बीरा बद जिन जाहहू, पुरुष नाम निज मूल ।
जा दिन हंसा तन तजे, मेटो संशय शूल ॥५॥

डोरी ६

शब्द सनेही हंसा, तुम जग तजि होहु निनार हो ॥टे०॥
सत्त शब्द निज डोर है, तुम हंसा गहो बनाय ।
सत बीरा निज नाम है, तुम चाखत ही घर जाय ॥१॥
बिना बीज को जाम है, बिन अंकुर को झाड़ ।
बिन डोंडी फल लागिया, कोई साधु करै विचार ॥२॥
अजर केर अंकुर भये, अजर की लागी डार ।
अजर फल फूल लागिया, कोई साधु करे अहार ॥३॥
मोहि अजर करि जानहू, अम्मर देउँ बताय ।
जिहि भांड़े निज सांच है, हम तामो रहे समाय ॥४॥
कहैं कबीर धर्मदास सों, बेगि जाहु संसार ।
सोहंगम के बाँह से, तुम हन्स उतारो पार ॥५॥

साखी

उत्तर घाटी उतरि के, पाँजी बैठे जाय ।
तहवाँ सुरति समोवै, पुरुष के परसे पाय ॥६॥

डोरी ७

चलु सखी चौपर खेलिये, तन मन से बाजी लाय हो ॥टे०॥
चौपर खेलौं सुन्न में, खेलौं दिन औ रात ।
चल हन्सा घर आपने, जहँ तेरी उतपात ॥१॥
चौपर खेलौं पीव से, बाजी लगावौं जीव ।
जो हारौं तो पीव की, जो जीतौं तो पीव ॥२॥
चार गली घर एक है, चार वरन एक सार ।
पासा डारौं प्रेम के, जीत चली संसार ॥३॥
चौपरिया के खेल में, जुग नहने को दाँव ।
नरद अकेली हो रही, छिन पल खावे घाव ॥४॥
चौरासी घर भरम के, पव में अटकी आय ।
अब की पव जो ना परे, फिर चौरासी जाय ॥५॥
पगरा से बाजी लगे, परे अठारह दाँव ।
सार गँवाई हाथ से, सिर पर लागे घाव ॥६॥
जात वरण कुल मेटिके, पावे भक्ति अटूट ।
कहे कबीर धर्मदास सो, तेरो कोई न पकरे खूँट ॥७॥

साखी

मैं कबीर विचलौं नहीं, शब्द मोर समरथ ।
ताको लोक पठाइहौं, जो चढ़े शब्द के रथ ॥७॥

(Contd. on inside front cover)

|| sātvika-ānandī caukā āratī ||

satyapuruṣasamārambhāṁ, kabīrācārya madhyamām |
asmadācāryaparyantāṁ, bande guruparamparām ||

|| sākhī ||

saba vidhi muda mangala karana, harana aleśa-kaleśa |
satyanāma sama nāma nahīn, varadāyaka varadeśa ||

maya mangala mangala karana, mangala rūpa kabīra |
dhyāna dharata nāśata sakala, karma janita bhavapīra ||

guru bhakti ati kīnhiyā, pānca kīnha prakāśa |
kara jori vinatī karun, dhanya dhanya dharmadāsa ||

anśa-banśa saba santa guru, bhaye āhi aura āma |
sabko merī bandagī, bāra –bāra karun yāma ||

guru murati gati candramā, sevaka naina cakora |
āṭha pahara nirkhata rahūn, guru mūrati kī aora ||

āmī samāna āpa ho, amī sama vacana tumhāra |
ḍāyā kījai dāsa para, nirbhaya śabda ucāra ||

|| bhajana – svāgata ||

āye eka dīna dayāla, dayā kari sāheba āye ho || ṭeka ||
āva-āva se ghara potāye, āngana dhūri bahāye ho |
motiyana cuni-cuni cauka purāye ho, sādhū baiṭhe bharapūra ||
bhajo more sāheba āye ho ..... || 1 ||

śveta hī āsana śveta sinhāsana, śveta dhvajā phaharāye ho |
khasama dhanī guru baiṭhe hī taṭa para, satasukṛta leī āye ||
bhajo more sāheba āye ho ..... || 2 ||

kahain kabīra suno bhāī sādho, eka hī nāma jaga sārā ho |
eka nāma binu pāra na paiho, ḍuba mare sansāra ||
bhajo more sāheba āye ho ..... || 3 ||

|| bhajana – svāgata ||

gaḍhabāndho eka āmīna binave, kaba sāheba more āye ho || ṭeka ||
jaba sataguru gaḍhabāndho āye, sakhiyana mangala gāye ho |
jaba sataguru paiyāra men āye, āmīna kalaśa dharāye ho || 1 ||

jaba sataguru more āngana men āye, motiyana caukā purāye ho |
jaba sataguru more mahala men āye, kanaka bhaṇḍāra luṭāye ho || 2 ||

caraṇa pakhāri caraṇāmṛta līnhā, lekara palanga baiṭhāye ho |
pāna supārī nariyara kelā, āmīna bhenṭa caḍhāye ho || 3 ||

cāra khūnṭa ke caukā pote, bīca dhare paravānā ho |
karahin āratī sanmukha āye, caraṇa taka bhaī ṭharī ho || 4 ||

likha paravānā sataguru dīnhā, ajara amara kara līnhā ho |
kahain kabīra suna dharmani āmīna, lehū mukti paravānā ho || 5 ||

|| bhajana – svāgata ||

koī guru jana āye hain more anganā, āye more anganā ho || ṭeka ||
caraṇa pakhāri caraṇāmṛta līnhā, deī ke sinhāsana baiṭhāye more ānganā || 1 ||
kāhe ke khambhe gaḍhe hain more anganā, kāhe ke manḍavā chavāye more anganā || 2 ||

kele ke khambhe gaḍhe hain more anganā, patavana ke manḍavā chavāye more anganā || 3 ||
kāhe ke cauka purāye more anganā, kāhe ke kalaśa dharāye more anganā || 4 ||
motiyana cauka purāye more anganā, sone ke kalaśa dharāye more anganā || 5 ||
dharmadāsa kī āmini vinave, āja to ānanda bhaye hain more anganā || 6 ||

pada (utsava)

āja more sataguru āye mijamāna | tana mana dhana saba karūn kurabāna ||
prema ko palaṅga diyo hai bichāya | caraṇapakhāri caraṇāmṛta pāya || 1 ||
bhāvasahita bhojana parasāda | turata karūn kachu lāge na bāra || 2 ||
prema kī paṭarī, surata kī ḍora | āja more sāhaba jhulata hiṇḍora || 3 ||
sāhaba āye main phulī na samāūn | dekha didāra magana ho jāūn || 4 ||
kāha kahūn kachu varṇi na jāya | tīna loka pāsanga men jāya || 5 ||
dharmadāsa āmini samujhāya | bhakti karo tuma surati lagāya || 6 ||
kahain kabīra suno dharmadāsa | kevala nāma gaho viśvāsa || 7 ||

|| sākhī ||

guru ko mānuṣa jo ginain, caraṇāmṛta ko pāna |
te nara caurāsī phirain, bhaṭaken cāron khāna ||

śabda

guru dariyāva nahānā ho jāse duramati bhāge |
guru dariyāva sadā jala nirmala, paiṭhata upajata gyānā ho ||
jaba lagi guru dariyāva na pāve, taba lagi phirata bhulānā ho ||
koṭina tīratha guru ke caranana, śrīmukha āpa bakhānā ho ||
kahain kabīra suno bhāī sādho, ajara amara ghara jānā ho ||

śabda (caraṇāmṛta lene kā)

jinako caraṇāmṛta līje | tāhe gārī kāhe ko dīje ho || ṭe 0 ||
sansāra jāla hai bhārī | more sādhuna kī gati nyārī ho || 1 ||
ve to kāma krodha made māte | tāte bāndhe yamapura jāte ho || 2 ||
ye to lobha moha bharmāvai | tāte hīrā hātha na āve ho || 3 ||
jāse mukti padāratha pāīye | tāke hirade māhi samāye ho || 4 ||
asa kahanhi kabīra vicārī mohe | sādhu sangata lage pyārī ho || 5 ||

|| sākhī ||

guru ko mānuṣa jānate, te nara kahiye andha |
lakha caurāsī bhaṭakate, paḍate yama ke phanda ||

sākhiyān (jyoti prakāśana)

anahada bājā bājiyā, jyoti bhaī parakāśa |
jana kabīra andara khaḍe, svāmī sanamukha dāsa || 1 ||
bājā-bājā rahita kā, paḍā nagara men śora |
sataguru khasama kabīra hain, najara na āvai aura || 2 ||
jhalake jyoti jhilamilī, bina bātī bina tela |
cahun diśa sūraja ūgiyā, esā adbhuta khela || 3 ||
jāgṛta rūpī rahata hain, sata mata gahira gambhīra |
ajara nāma vinaśe nahīn, so 'ham satta kabīra || 4 ||
pada setī paricaya karo, yaha nija surati lagāya |
kahain kabīra dharmadāsa so, āvā gamana nasāya || 5 ||

|| sākhī ||

dharmadāsa vinatī kare, sunaguru kṛpānidhāna |
jarāmaraṇa duḥkha meṭi ke, dījiye pada nirvāṇa ||

ramainī 1

prathamahi mandira cauka purāvā | uttama āsana śveta bichāvā || 1 ||
hansā paga āsana para dīnhā | satya kabīra kahī kahī līnhā || 2 ||
nāma pratāpa hansa para chāje | hansa hi bhāra ratī nahi lāge || 3 ||
bhāra utāra āpa śira līnhā | hansa chuḍāya kāla so dīnhā || 4 ||
sādhu santa mili baiṭhe āī | bahu vidhi bhakti kare citalāī || 5 ||
pāna supārī nariyara kerā | launga lāyacī kisamisa mevā || 6 ||
savā śera āno miṣṭhānā | satta savā sau uttama pānā || 7 ||
sāta hātha bastara paramānā | so sataguru ke āge ānā || 8 ||
dhanya santa jina āratī sājā | dūḥkha dāridra vāke ghara sobhāgā || 9 ||
kahen kabīra suno dharmadāsā | voham̐ soham̐ śabda prakāśā || 10 ||

|| sākhī ||

candana caukā kijiye, maliyāgira ko nāma |
cāron kanvala sudhāra hun, madhya tāhi ke dhāma ||

ramainī 2

agara candana ghasi caukādīnhā | ādi nāma kā sumiraṇa kīnhā || 1 ||
jaba son dhanī mana citavana kīnhā | caukā seta hansa kari līnhā || 2 ||
dharmadāsa caukā hai sārā | caukā baiṭhe puruṣa piyārā || 3 ||
sādhu santa mili baiṭhe āī | surati nirati son śabda laulāī || 4 ||
kahanhi kabīra śabda jo dhyāve | śabdahin men puni darśana pāye || 5 ||

|| sākhī ||

caukā cāra sudhāra hūn, cāra kanvala asthāna |
cāron pavana urehi ke, dekho tatva amāna ||

ramainī 3

ādi nāma cita cetahu bhāī | ārati sājahu jyoti barāī || 1 ||
pāṭa pitāmbara ambara chāī | jahavān hansa karen gavanāī || 2 ||
śveta sinhāsana agama apārā | sata sukṛta jahavān pagu dhārā || 3 ||
bhāgā timira bhayā parakāśā | ādi jyoti kīnhā rahivāsā || 4 ||
śveta sarūpa śabda hai bhāī | agravāsa men rahai samāī || 5 ||
kahain kabīra nija bheda hamārā | satta śabda gahi utaro parā || 6 ||

|| sākhī ||

jo racanā hai loka kī, so caukā vistāra |
kī baiṭhe nijavanśa suta, kī pūrā kanḍihāra ||

ramainī 4

kadalī dala uttama vistārā | ati sundara sājo panavārā || 1 ||
sudhara miṭhāī uttima pānā | nariyara ansa lehu pahicānā || 2 ||
sāta pānca nariyara mo nāhī | tāhi jīva kī gaho jina bāhī || 3 ||
sāta pānca nariyara mo rekhā | sanpuṭa gupta pragaṭa ho dekhā || 4 ||
savā sera ānon miṣṭānā | satta savā sau uttama pānā || 5 ||

sāta-hātha bastara paramānā | so sataguru ke āge ānā || 6 ||
itanā hoya avara nahi bhāī | jāso kāla dagā miṭa jāī || 7 ||
lakṣha jīva nita karata ahārā | tāte thāpeun yaha bevahārā || 8 ||
aura bheda saba rākho goī | sata suni ke jīva vicale soī || 9 ||
sataguruśaraṇa jīva jo āve | tāko kāla sadā śira nāve || 10 ||
kahain kabīra suno dharmani nāgara | bīrā nāma son hansa ujāgara || 11 ||

|| sākhī ||

kalaśa āratī dala śilā, nariyara pāna miṣṭhana |
pūngī phala launga lāyacī, śabda bhajana dhuna dhyāna ||

ramainī 5

sata bārī se phūla mangāvā | sata sukṛta ko āni caḍhāvā ||1||
puṣpa kī bāsa bhaī aghrānī | ādi nāma taba hī pahicānī ||2||
tihi ke madhya adhika sukhadhārā | tehi sumiraṇa se hansa ubārā ||3||
mana vacana karma sumira jo koī | tāko āvāgamana na hoī ||4||
śveta kamala kā parimala hoī | nirakhī dekhu jagata guru soī ||5||
kahain kabīra bheda sunu morā | agara vāsa mahake cahun orā ||6||

|| sākhī ||

puhupa dvīpa para baiṭhake, sukha sāgara asthāna |
āpa dvīpa rahivāsa hai, mūla karī paramāna ||

ramainī 6 (āratī mahātmya)

dharmadāsa māno upadeśā | satya puruṣa kā sunahu sandeśā || 1 ||
dharmadāsa māno cita lāī | raho ṭhikā para ucaṭa na jāī || 2 ||
āratī ajara karahu banāī | nirbhaya hansa loka ko jāī || 3 ||
koṭina gyāna kathe nara loī | binā āratī bace nahin koī || 4 ||
jā ghara āratī nāhina sājī | tā ghara dharmarāya kī bājī || 5 ||
ajara jyoti āratī parakāśā | dūta bhūta yama mānain trāsā || 6 ||
kahain kabīra suno dharmadāsā | hansā pāve loka nivāsā || 7 ||

|| sākhī ||

kahain kabīra dharmadāsa so, śabda na khālī hoya |
tumahi choḍi aurana gahe, so jiva jāya bigoya ||

ramainī 7

darśana dehu guru nāma sanehī | tuma binu dukha pāve merī dehī || 1 ||
anna nahi bhāve nīnda na āve | bāra-bāra mohi biraha satāve || 2 ||
ghara anganā mohi kucha na suhāve | viraha bhayo tana rahi nahi jāve || 3 ||
nayanā nīra bahe jala dhārā | nisadina pantha nihārun tumhārā || 4 ||
jaise maṇi bina phaṇi bikarālā | aise tuma bina hāla hamārā || 5 ||
jaise cātaka svāti kī āśā | aise tuma bina meraun piyāsā || 6 ||
jaise mīna mare bina nīrā | aise tuma bina dukhita śarīrā || 7 ||
hau sāheba tuma dīna dayālā | kehī kāraṇa aba mohi bisārā || 8 ||

|| sākhī ||

vinavata hūn kara jorike, suna guru kṛpā nidhāna |
santana ko sukha dījiye, dayā garībī gyāna ||

prema se boliye sadguru kabīra sāheba kī jaya (3)

śabda (āratī)

mangala rūpa hoya āratī sāje | abhaya niśāna gyāna dhuna gāje || ṭe0||
achaya viracha jākī ammara chāyā | prema pratāpa amṛta phalapāyā || 1 ||
niśi vāsara jahan pūrana candā | parama puruṣa tahan karata anandā || 2 ||
tana mana dhana jina arapana kīnhā | parama puruṣa paramātama cīnhā || 3 ||
jarā maraṇa kī sanśaya meṭo | surati santāyana sataguru bhenṭo || 4 ||
kahain kabīra hirambara hoī | nirakhi nāma nija cīnhe soī || 5 ||

|| āratī 2 ||

jaya jaya satya kabīra |
satyanāma sata sukṛta, satarata hatakāmī |
vigata kaleśa satadhāmī, tribhuvana pati svāmī ||1||
jayati jayati kabbīram, nāśaka bhavabhīram |
dhāryo manuja śarīraṁ, śiśuvara sara tīram ||2||
kamala patra para śobhita, śobhājita kaise |
nīlācala para rājita, muktāmaṇi jaise ||3||
parama manohara rupam, pramudita sukha rāśī |
ati abhinava avināśi, kāśī puravāsī ||4||
hansa ubārana kāraṇa, pragaṭe tana dhārī |
parakha rūpa vihārī, avicala avikārī ||5||
sāheba kabīra kī āratī, agaṇita aghahārī |
dharmadāsa balihārī, muda mangalakārī ||6||

āratī arapaṇa sākhī

āratī lehu gosāyīn jī, jo hove mama kāja |
tana mana dhana nyochāvarī, sukha sampati kul arāśi ||
satyanāma kī āratī, nirmala bhayā śarīra |
dharmadāsa satyaloka gaye, guru bahinyā mile kabīra ||

prema se boliye sadguru kabīra sāheba kī jaya .... (3)

nāriyala moranā - sākhī

dharmadāsa unamunī baso, karahu jo śabda ko jāpa |
sāra śabda sumiraṇa karo, munivara marata piyāsa ||
sāra śabda śikhara para, mūla ṭhikānā soī |
bina sadguru pāvai nahīn, lākha kathai jo koī ||
veda thake bramhā thake, thāke munivara devā |
kahain kabīra suno sādhavā, karo satguru kī sevā ||

|| sākhī ||

kalaśa āratī dala śilā, cāron anka sudhāra |
rekhā likha tāpara śilā, tahān kapūra prakāśa ||
anśa rekha sura sīkha ko, guru svāsā dhara eka |
tāmon nariyara morahū, ṭūṭe vighna aneka ||

mangala (banajārana)

banajārana vinatī karai, suna sājanā |
nariyara linho hātha, santa suna sājanā || 1 ||
binā bīja ko vṛkṣa hai, suna sājanā |
bina dharatī ankūra, santa suna sājanā || 2 ||

jāko mūla patāla hai, suna sājanā |
nariyara śisa akāśa, santa suna sājanā || 3 ||
ḍanḍiyā pānca pacīsa hai, suna sājanā |
tīna janī siradāra, santa suna sājanā || 4 ||
binā bheda jina morahū, suna sājanā |
jīva ikottara hāna, santa suna sājanā || 5 ||
guru ke śabda lai morahū, suna sājanā |
yama śira maradana hāra, santa suna sājanā || 6 ||
sakhiyān pānca sahelarī, suna sājanā |
nava nārī vistāra, santa suna sājanā || 7 ||
kahain kabīra baghela se, suna sājanā |
rānī indramatī siratāja, santa suna sājanā || 8 ||

śabda (bhoga lagāne kā)

satta puruṣa ko bhoga lāge | sīngī śabda anāhada bājai || ṭe 0 ||
kadali patra sājo panavārā | śitala śabda jyoti ujiyārā || 1 ||
nariyara mora khurorī kīnhā | ādi nāma antara ghaṭa cīnhā || 2 ||
sughara miṭhāī madhura miṭhāī | prīti bhāva se santa kulāī || 3 ||
launga lāyacī kisamisa kerā | madhura madhura rasadākha ghanerā || 4 ||
sukhasāgara ke niramala nīrā | jāpara sataguru tṛpata śarīrā || 5 ||
satta puruṣa ko arpaṇa kīnhā | śankha śabda dhuna bāje bīnā || 6 ||
so parasāda dāsa ko dīnhā | jāte kāla bhayo hai adhīnā || 7 ||
pāna prasāda jīva jo pāve | ankuri hansā sataloka sidhāve || 8 ||
esā bheda karo parakāśā | satya śabda māno visvāsā || 9 ||
kahain kabīra suno dharmadāsā | vīrā nāma karo parakāśā || 10 ||

śabda (acavana kā)

ācavana kije guru kṛpānidhāna || ṭe 0 ||
sevaka liye prema jala jhārī, kharicā bramha giyāna || 1 ||
bhāva bhagati se bīrā līje, santana jīvana prāṇa || 2 ||
amī ugāra dāsa ko dīje, jana ko parama kalyāṇa || 3 ||
hṛdaya kamala bica palanga bichāyo, pauḍhe puruṣa purāṇa || 4 ||
caraṇa kamala kī sevā karihon, dāsātana paramāṇa || 5 ||
surati ke bijanā ḍulāūn main ṭhāḍho, eka ṭaka lāgo dhyāna || 6 ||
dharmadāsa para dayā kīje, pūraṇa pada niravāṇa || 7 ||

|| sākhī ||

kharicā acavana leīke, ekaṭaka sumiro dhyāna |
kahain kabīra dharmadāsa so, soham śabda nirvāṇa ||
soham śabda so kāja hai, suno santa mati dhīra |
soham ḍorī sataloka gaye, sataguru kahain kabīra ||
prema se boliye sataguru kabīra sāheba kī jaya | (3)

śabda (tinukā arpaṇa kā)

jamuniyā kī ḍāra sāheba toḍa dīje || ṭe 0 ||
eka jamuniyā kī caudaha ḍara, sāra śabda lai toḍa dīje ho || 1 ||
surati hamārī ajaba piyāsī, prema amīrasa ghora dīje ho || 2 ||
guru hamāre gyāna jauharī, hīrā padāratha taula dīje ho || 3 ||
yaha sansāra viṣaya rasa māte, bharama kinvariyā khola dīje ho || 4 ||
dharmadāsa kī araja gusānyī, jīvana ke banda chuḍā dīje ho || 5 ||

śabda (kaṇṭhī kā)

pāyo nija nāma gale ko haravā || ṭe 0 ||
sataguru paṭavā ajaba laharavā | choṭī moṭī ḍoliyā men cāra kaharavā || 1 ||
prema prīti kī pahiri cunariyā | nihuri naco sāhaba darabaravā || 2 ||
sataguru kunjī daī mahala kī | jaba cāho taba khola kivaḍavā || 3 ||
yahī merī byāha yahī merogavanā | kahain kabīra bahuri nahi avanā || 4 ||

śabda (nāma sunāne kā)

guru paiyān lāgo nāma lakhāya dīje ho || ṭe 0 ||
jugana jugana kā soyala manuvā | de sata śabda jagāya dīje ho || 1 ||
ghaṭa andhiyāra kachū nahi sūjhe | gyāna kī dṛṣṭi batāya dīje ho || 2 ||
viṣa kī lahara uṭhe ghaṭa bhītara | amṛta būnda cuvāya dīje ho || 3 ||
gaharī nadiyā nāva purānī | kheī ke pāra lagāya dīje ho || 4 ||
dharmadāsa kī araja gusānyī | jīvana banda chuḍāya dīje ho || 5 ||

pāna paravānā sākhī

eka pāna baraina ke, hāthon hātha bikāya |
eka pāna sataguru diye, amara loka liye jāya ||

śabda – bhajana (pāna paravānā)

sataguru pāna bicāren ho, hansā kara lehu nā ubāra || ṭeka ||
koī more lāve lavangiyā ho, koī more lāvelā pāna |
koī more lāve sukha nariyara ho, nariyara more prāṇa || 1 ||
sāheba kabīra lāve lavanga ho, dharmadāsa lāve pāna |
māī āminī lāve sukha nariyara ho, nariyara more prāṇa || 2 ||
kauna beriyā paibo lavanga ho, kauna beriyā paibo pāna |
kauna beriyā paibo sukha nariyara ho, nariyara more prāṇa || 3 ||
calana ke beriyā paibo lavanga ho, baiṭhana ke beriyā pāna |
pūjā ke beriyā paibo sukha nariyara ho, nariyara more prāṇa || 4 ||
kaise ke sīncaba lavanga ho, kaise ke sīncaba pāna |
kaise ke sīncaba sukha nariyara ho, nariyara more prāṇa || 5 ||
nīra se sīncaba lavanga ho, amīrasa sīncaba pāna |
dūdha se sīncaba sukha nariyara ho, nariyara more prāṇa || 6 ||
hamare ke do-do balakavā ho, hamahīn to ādi-anta |
sāheba kabīra guru ke mangala ho, gāven len dharmadāsa || 7 ||

pariśiṣṭa (ramainī-ānanda āratī)

ramaini 1

dharmadāsa tuma pantha ujāgara | arapo dala pahunco sukhasāgara || 1 ||
candana caukā racahu banāī | satasakṛta jahān baiṭhe āī || 2 ||
sata bārī ke phūla mangāvā | so sataguru ko āna caḍhāvā || 3 ||
dharmadāsa uṭhi binatī kīnhā | ho sataguru hama tumako cīnhā || 4 ||
jo tuma kaho māni leun soī | tuma guru choḍa aura nahi koī || 5 ||
kahanhi kabīra suno dharmadāsā | vīrā nāma karo parakāśā || 6 ||

|| sākhī ||

launga ilāyacī nāriyara, ārati dharo lisāya |
kahain kabīra dharmadāsa so, kāla dagā miṭa jāya ||

ramaini 2

dharmadāsa tuma bīrā lehū | jambū dvīpa ke jīvana dehū || 1 ||
main kā jānaun pantha kī ādi | jambū dvīpa basain bakavādī || 2 ||
paḍhai veda aura karain acārā | ve nahi mānain śabda tumhārā || 3 ||
jo nahi mānnai śabda hamārā | so calī jaihain jama ke dvārā || 4 ||
jo koī mānai śabda hamārā | vo cali ehain loka manjhārā || 5 ||
antara kapaṭa karai mana mānhi | tākī loka badi nahi bhāī || 6 ||
kahain kabīra suno dharmadāsā | voham soham śabda prakāśā || 7 ||

|| sākhī ||

anśa rekha sura sīkha ko, guru svāsā ghara eka |
tāmon nariyara morahū, ṭūṭe vighna aneka ||

ramainī 3

ugra gyāna kā kahaun sandeśā | dharmadāsa māno upadeśā || 1 ||
dharmadāsa māno citta lāī | raho ṭhikā para ucaṭa na jāī || 2 ||
ajara loka men ārati kīnhān | so ārati hama tumako dīnhā || 3 ||
jā ghara ārati nāhi na sājī | tā ghara dharmarāya kī bājī || 4 ||
jā ghara ārati karahu banāī | nirbhaya hansa loka ko jāī || 5 ||
koṭina gyāna kathe nara loī | bina ārati bace nahi koī || 6 ||
ajara joti ārati parakāśā | dūta bhūta jama māne trāsā || 7 ||
kahain kabīra suno dharmadāsā | hansā pāve loka nivāsā || 8 ||

|| sākhī ||

kalaśa āratī dala śilā, nariyara pāna miṣṭhāna |
pūngī phala launga lāyacī, śabda bhajana dhuna dhyāna ||

(śabda-ānanda utsava ke)

śabda 1

bhajana men hota ananda ananda |
barasata śabda amī ke bādala, bhīnjata hain koi santa || ṭe 0||
roma roma abhi antara bhīnje, pārasa parasata anga |
gaho nija nāma trāsa tana nāhī, sāhaba hain tere sanga || 1 ||
agra vāsa jahān tatva kī nadiyā, māno aṭhāraha ganga |
kari asanāna magana ho baiṭhe, caḍhata śabda ko ranga || 2 ||
svāsā sāra raco mere sāhaba, jahān na māyā mohanga |
kahanhi kabīra suno bhaī sādho, japahu sohanga sohanga || 3 ||

śabda 2

āba hama ānanda ke ghara pāyo |
jaba se dayā bhaī satguru kī, abhaya nisāna ghumāyo ||ṭe 0||
kāma krodha ki gāgara phorī, mamatā nīra bahāyo |
taji parapānca veda vidhi kariyā, carana kamala cita lāyo || 1 ||
pānca tatva kī yā tana gūdaḍī, mamatā ṭobha lagāyo |
hada ghara choḍa behada ghara āsana, gagana manḍala maṭha chāyo || 2 ||

cānda na sūrya divasa nahi rajanī, tahan jāī lāra larāyo |
kahen kabīra koī piyā kī piyārī, piyā piyā raṭa lāyo || 3 ||

śabda 3

gurujī mohe bahuta nihāla kiye ||ṭe 0 ||
nāma ko kanthī gala bica ḍarī, śira para chatra diye |
karmahi kāṭi kiye guru niramala, ujvala hansa kiye || 1 ||
bhavasāgara men ḍubata dekhe, jama se rākhi liye |
kahen kabīra suno bhāī sādho, jāya nisāna diye || 2 ||

śabda 4

aba hama soi parama pada jānā || ṭe 0 ||
nā vahān siddha nahīn vahān sādhaka, dūsara kahata divānā |
nā vahān candā nā vahān sūraja, nā rajanī nā bhānā || 1 ||
makarī tāra sveta hai jhīno, tahān mero mana mānā |
kahen kabīra cinṭī ke khura men, pinḍa bramhanḍa samānā || 2 ||

(mangala-ānanda utsava ke)

mangala 1

cala sataguru ke hāṭa, gyāna budhi lāīye |
līje sāhaba ko nāma, parama pada pāīye || 1 ||
sāhaba saba kachu dīnha, devana kachu nā rahyo |
tumahi abhāgin nāra, amṛta taj viṣa piyo || 2 ||
gaī thī piyā ke mahala, piyā sanga nā racī |
hirade kapaṭa raho chāya, kumatī lajjā basī || 3 ||
jo guru rūṭhe hoya, to turata manāīye |
ho rahu dīna adhīna, cūka bakasāīye || 4 ||
sataguru dīna dayāla, dayā dila he rahīn |
koṭi karama kaṭi jāya, palaka cita pherahīn || 5 ||
bhalo bano sanjoga, prema ko colanā |
tana mana arapo śisa, sāheba hansi bolanā || 6 ||
kahain kabīra samujhāya, samujhi hirade dharo |
jugana jugana karo rāja, so duramati pariharo || 7 ||

mangala 2

sataguru dīnadayāla, kāla bhaya meṭiyā |
pāyo dīpa gyāna, amara vara bheṭiyā || 1 ||
jo kucha dekhā cāhon, calo sata sanga men |
una se karahu saneha, milo usa ranga men || 2 ||
avigata agama abheva, akhanḍita pūra hai |
jhilamila jhilamila hoya, sadā vaha nūra hai || 3 ||
ingalā pingalā sādha, yahi eka khyāla hai |
candra bhānu gama nāhi, tahān mera lāla hai || 4 ||
kahain kabīra samujhāya, samūjha nara bāvarā |
hansa gaye sata loka, utari bhava-sāgarā || 5 ||

mangala 3

akhanda sāheba ko nāma aura saba khanḍa hai |
khanḍita meru sumeru, khanḍa bramhanḍa hai || 1 ||

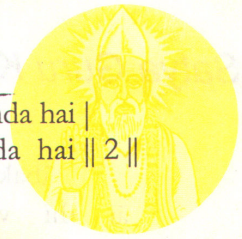

thira na rahe dhana dhāma, so jīvana dunda hai |
lakha caurāsī ke jīva, pare yama phanda hai || 2 ||
jinako sāheba son heta, soī nirabandha hai |
una santana ke sanga, sadā ānanda hai || 3 ||
cancala mana thira rākha, tabai bhala ranga hai |
ulaṭa nikaṭa bhara pīva, so amṛta ganga hai || 4 ||
dayā bhāva citta rākha, to bhakti ko anga hai |
kahain kabīra cita ceta, so jagata patanga hai || 5 ||

mangala 4 (puraṇamāsī)

pūraṇamāsī āja, to mangala gāīye |
sataguru caraṇa manāya, param pada pāīye || 1 ||
prathamahi mandira jhāra, to candana putāīye |
nūtana bastara āna, candevā tanāīye || 2 ||
gajamotiyana ke cauka, so tahān puraīye |
mevā aru miṣṭānna, bahuta vidhi lāīye || 3 ||
gau ghṛta pakavāna, so dhotī uḍhāīye |
pālava sahita ju kalaśā, tahān dharāīye || 4 ||
pānca jyoti ko dīpaka, tahān barāīye |
guru ke hetu so āsana, tahān bichāīye || 5 ||
guru ke caraṇa parivāra, tahān baiṭhāīye |
sādhu santa sanga lāya, to āratī utāriye || 6 ||
āratī kari puni nariyara, tahān morāīye |
puruṣa ko bhoga lagāya, sakhā mili pāīye || 7 ||
pāya prasāda aghāya, caraṇa citta lāīye |
jugana jugana ko kṣudhā, so turata bujhāīye || 8 ||
ati adhīna hoya prema so, guru hi rijhāīye |
kahain kabīra satabhāva so, loka sidhāīye || 9 ||

sātvika calāvā caukā āratī

|| sākhī ||

āye hain so jāyange, rājā ranka phakīra |
eka sinhāsana caḍhi cale, eka bandhe jāta jañjīra ||

ḍorī 1

śabda sinhāsana pāṭa men, tuma hansā baiṭho āya ho || ṭe 0 ||
kauna nāma muktāmaṇi, kauna nāma ve anśa |
kauna nāma ve puruṣa hain, kauna nāma ve hansa || 1 ||
ajara nāma muktāmani, ugra nāma ve anśa |
gyānī nāma ve puruṣa hain, surati nāma ve hansa || 2 ||
mūla dvīpa nija dvīpa hai, aura sunī hama pāha |
baiṭhe hansa ubārahīn, sohangama ke bānha || 3 ||
jambū dvīpa ke hansā bhāī, pānjī baiṭhe āya |
kahen kabīra dharmadāsa so, tuma lāvahu bānha caḍhāya || 4 ||

|| sākhī ||

hansā chuṭe bāja jyon, koṭi sinha kā jora |
sumiraṇa dīna dayāla kā, pahunci gayā nija ṭhaura || 1 ||

ḍorī 2

ābakī bera ubāriye, merī arajī dīnadayāla ho || ṭe 0 ||
āī thī vahi deśa se, bhaī paradeśī nāra |
vaha māraga men bhūliyā, bisarī gaī nija nāha || 1 ||
jugana jugana bharamata phirī, yama ke hātha bikāya |
kara jore binatī karaun, mohi milake bichuri mata jāya || 2 ||
viṣama nadī vikarāla hai, vohita kariyā dhāra |
moha nagara ke ghāṭa men, khāye sura nara jhāra || 3 ||
śabda jahāja kabīra kā, sataguru khevanahāra |
koī koī hansa ubārahīn, palamen lehin chuḍāya || 4 ||

|| sākhī ||

calī jo putarī lona kī, thāha sindhu ko lena |
āpuhi gali pānī bhaī, ulaṭi kahe ko baina || 2 ||

ḍorī 3

ṇāma saneha na chāṇḍiye, bhāve tana mana dhana jari jāya ho || ṭe 0 ||
pānī se paidā kiyā, nakha śikha sīsa banāya |
vaha sāheba ko bisāriyā, tero gāḍho hota sahāya || 1 ||
mahala cune khāī khane, ūnce ūnce dhāma |
jaba yama baiṭhe kanṭha men, tere koī na āve kāma || 2 ||
māta-pitā suta bāndhavā, aura dulārī nāra |
yaha saba hilamila bīchure, terī śobhā hai dina cāra || 3 ||
jaisī lāgī ora se, dina dina dūnī prīti |
nāma kabīra na chāṇḍiye, bhāve hāra hoya kī jīta || 4 ||

|| sākhī ||

unamuni caḍhi akāśa men, gaī gagana men chūṭa |
hansa calāvā jāta hai, kala rahā sirakūṭa || 3 ||

ḍorī 4

kauna milāve jogiyā, jogiyā bina raho na jāya ho || ṭe 0 ||
hon hiranī piya pāradhī, mārā śabda kā bāna |
jāhi lage soī jāniyā, aura darada nahin jāna || 1 ||
piya kāraṇa piyarī bhaī, loga kahen tana roga |
japa tapa langhana main karaun, piyā milana ke joga || 2 ||
hūn to piyāsī pīva kī, raṭaun sadā piva piva |
piyā milain to jīya haun, nāto tyāgaun jīva || 3 ||
kahe kabīra suna joginī, tanahī men mana hī samāya |
pichalī prīti ke kāraṇe, jogī bahuri milenge āya || 4 ||

|| sākhī ||

asa vīrā paratāpa bala, prabala kāla te hoya |
jihi satagura bahinya mile, hansa na jāya biyoga || 4 ||

ḍorī 5

hansā duramati choḍi de, tuma niramala hoya ghara āva ho || ṭe 0 ||
dudha hi se dadhi hota hai, dadhi mathi mākhana hoya |
mākhana se ghṛta hota hai, bahuri na chācha samoya || 1 ||

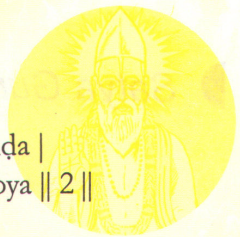

ūkhahi se guḍa hota hai, guḍa de hota hai khāṇḍa |
sataguru mila misarī bhaye, bahuri na ūkha samoya || 2 ||
khāṇḍa jo bagarī reta men, gaja mukha cūni na jāya |
jāti barana kula khoya ke, cinṭī hoya cuni khāya || 3 ||
dāga jo lāgā nīla kā, nava mana sābuna dhoya |
koṭi jatana parabodhiye, kāgā hansa na hoya || 4 ||
kahen kabīra suna keśavā, terī gati agama apāra |
bāpa binorā ho rahe, pūta bhaye cau tāra || 5 ||

|| sākhī ||

bīra bada jina jāhahū, puruṣa nāma nija mūla |
jā dina hansā tana taje, meṭon sanśaya śula || 5 ||

ḍorī 6

śabda sanehī hansā, tuma jaga taji hohu ninära ho || ṭe 0 ||
satta śabda nija ḍora hai, tuma hansā gaho banāya |
sata bīrā nija nāma hai, tuma cākhata hī ghara jāya || 1 ||
binā bīja ko jāma hai, bina ankura ko jhāḍa |
bina ḍoṇḍī phala lāgiyā, koī sadhu karai vicāra || 2 ||
ajara kera ankura bhaye, ajara kī lāgī ḍara |
ajara phala phūla lāgiyā, koī sādhu kare ahāra || 3 ||
mohi ajara kari jānahū, ammara deun batāya |
jihi bhāṇḍe nija sānca hai, hama tāmo rahe samāya || 4 ||
kahen kabīra dharmadāsa son, begi jāhu sansāra |
sohangama ke bānha se, tuma hansa utāro pāra || 5 ||

|| sākhī ||

uttara ghāṭī utari ke, pānjī baiṭhe jāya |
tahavān surati samovai, puruṣa ke parase pāya || 6 ||

ḍorī 7

calu sakhī caupara kholiye, tana mana se bājī lāya ho || ṭe 0 ||
caupara khelaun sunna men, khelaun dina au rāta |
cala hansa ghara āpane, jahan terī utapāta || 1 ||
caupara khelaun pīva se, bājī lagāvaun jīva |
jo hāraun to pīva kī, jo jītaun to pīva || 2 ||
cāra galī ghara eka hai, cāra varana eke sāra |
pāsā ḍārau prema ke, jīta calī sansāra || 3 ||
caupariyā ke khela men, juga nahane ko dānva |
narada akelī ho rahī, china pala khāve ghāva || 4 ||
caurāsī ghara bharama ke, pava men aṭakī āya |
aba kī pava jo nā pare, phira caurāsī jāya || 5 ||

pagarā se bājī lage, pare aṭhāraha dānva |
sāra ganvāī hātha se, sira para lāge ghāva || 6 ||
jāta varaṇa kula meṭike, pāve bhakti aṭūṭa |
kahen kabīra dharmadāsa so, tero koī na pakare khūnṭa || 7 ||

|| sākhī ||

main kabīra vicalaun nahīn, śabda mora samaratha |
tāko loka paṭhāihaun, jo caḍhe śabda ke ratha || 7 ||

ḍorī 8

gyāna ratana kī ānkhiyān, tuma dekho yama ke jāla ho || ṭe 0 ||
yama ke phandā kāṭo hansā, jaga taji hohu ninārā |
sataguru darśana denge, tuma utaro bhavajala pāra || 1 ||
jo tuma hansā nirguṇa cāho, sarguṇa karahu vicāra |
nirguṇa saraguṇa choḍike, tuma dou taji hohu ninārā || 2 ||
aṣṭa kamala dala ūpare, bhanvara guphā ke ghāṭa |
sahasa pankhuḍī kamala hai, paścima diśā ke bāṭa || 3 ||
nava khanḍa heta visāro hansā, śabda surati cita dhāra |
kahen kabīra dharmadāsa so, tuma utaro bhavajala pāra || 4 ||

|| sākhī ||

nāda sangātī kabīra hai, binda hi dehu na bhāra |
juga juga hansa hirabara, nāda ubārana hāra || 8 ||

My visit to India – 20th September 2003 to 16th November 2003

Since I came to Mauritius on the 24th of November 1999, this has been my first visit to India. On the 20th of September, the flight took off at 2.00 p.m. to arrive at the New Delhi Airport at 10.30 p.m. (Indian Standard Time). *śrī* Om Prakash Kabir Panthi had come to receive me at the airport and from there we proceeded for the *śrī* Kabir Mandir at Idgah Road. The following day I met other personalities of the Kabir *pantha* circle. On the 22nd, I had the opportunity to meet *pujya* Mahant *śrī* Jagdish Das Shatri Saheb who was at the *śrī* Kabir Mandir Jamnagar at that time. On the 23rd I reached Varanasi, *śrī* Kabir Kirti Mandir where I spent some time with *śrī* Shiv Muni Shastri, *śrī* Gyan Prakash Shastri and other devotees. At Lahartara, *śrī* Kabir Bagh, I met supreme personalities like *pūjyapāda hajūra śrī* Mukunda Mani Naam Saheb and Dharmadhikari *śrī* Vijay Das Shastri Saheb.

At *śrī* Kabir Kirti Mandir a great *bhanḍārā* was organised on the 2nd of October, in the honour of *pūjya satyalokavāsī gurudeva śrī* Sant Kishore Das Ji Saheb. Many Sants, Mahants, devotees and Scholars from Varanasi, Sarnath, Shivpur, Chitripur, *śrī* Kabir Chawra, *śrī* Kabir Vidhyalaya and from the Hariyana State participated in this ceremony. Were also present on this occasion Dr. Shivsundar Ganguli, Dr Rajendra Prasad Jayshwal, Dr Geetanjali, Dr Kapildev Brahamchari, Acharya M. Parmeshwar Das Saheb, M. Gurusharan Das Shastri and the three *sādhavī bahans* from Mauritius. *pantha śrī hajūra sāheba* also gave a *pravacana* to bless this religious event.

I reached my motherland – Baderaveli on the 13th of October and visited *mātā* Roopkunwar Devi Chandra. There I participated in a 9 days programme on the Ramayana as a chief guest. On the 16th I paid my respect to the *samādhī* of *hajūra* Muktamaneenaam Saheb where I met *pūjya* Mahant *śrī* Jyoti Das Saheb. On the 17th I left for Kharasia and met the *pujārī* Mahant *śrī* Rughoonath Saheb. On my return to Baderaveli from Kharasia I again had the opportunity to participate in various *satsang* and programmes organised in the village school and other nearby villages.

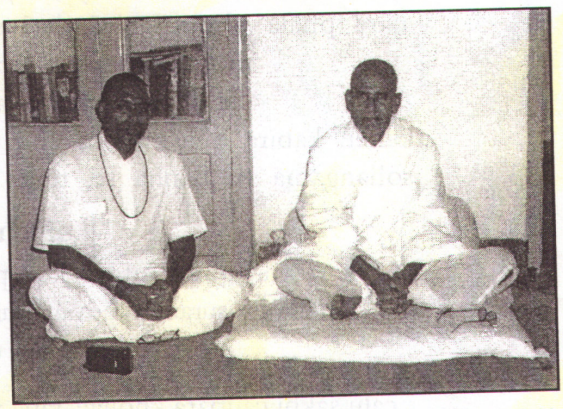

On the 23rd of October I came to Varanasi where I met A.M. Gangasharan Das Shastri and A.M. Vivek Das Shastri, and took part in *satsangs*. On the 27th I went to *śrī* Kabir Hanumat Pustakalaya where I was invited for a *bhanḍārā*. I was welcome by Sants, Mahants and devotees from Bihar, Varanasi and Gujarat who were there for the ceremony and also met A.M. Shyamsundar Das Shastri.

After meeting Sants and devotees on the 11th of November, I left Varanasi for Delhi. In Delhi I went to *śrī* Om Prakash Ji Saheb's place and stayed at *śrī* Kabir Mandir Idgah Road, where his father is the Mahant. I left Delhi at 7.30 p.m. on the 15th of November to reach Mauritius on the next day, where Sants, Mahants and devotees had come to receive me. I carried throughout my trip the blessings of all Sants and devotees and I would like to thank wholeheartedly the President and members of Shree Kabir Council, La Caverne Vacoas and all those who have in one way or the other helped me to make my visit to India a success. My heartfelt blessings go to all of you. ■

A.M. Sant Sarveshwar Das Shastri
Translated by Poorundass

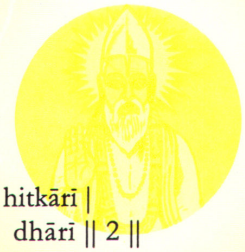

āratī – 3

jaya jaya śrī gurudeva ||
pārakha rūpa kṛpālaṁ, muda maya traya kālam |
mānasa sādhu marālaṁ, nāśaka bhava jālam || 1 ||
kunda induvara sundara, santana hitkārī |
śantākāra śarīraṁ, śvetāmbara dhārī || 2 ||
śveta mukuṭa cakrāṅkita, mastaka para sohe |
śubhra tilaka yuta bhṛkuṭi, lakhi muni mana mohe || 3 ||
hīrā maṇi muktādika, bhūṣita uradeśam |
padmāsana sinhāsana, sthita mangalaveśam || 4 ||
taruṇa aruṇa kañjāghrī, janamana vaśakārī |
tama agyāna prahārī, nakhadyuti ati bhārī || 5 ||
satya kabīra kī ārati, jo koī gāvai |
bhakti padāratha pāvai, bhava men nahīn āvai || 6 ||

āratī – 4

ārati dīna dayāla, sāheba ārati ho |
āratī garība nivāja sāheba āratī ho || ṭeka ||
gyāna ādhāra viveka kī bātī, surati jyota jahān jāga || 1 ||
āratī karun sadguru sāheba ki, jahān saba santa samāja || 2 ||
daraśa paras gurucaraṇa śaraṇa bhayo, ṭūṭi gayo yama ke jāla || 3 ||
sāheba kabīra santana ki kripāse, pūraṇa pada parakāśa || 4 ||

āratī – 5

āratī kijai bandīchora samarattha kī, caraṇa śaraṇa satanāma puruṣa kī || ṭeka ||
āratī kara puhumī paga dhāre, satayuga men satanāma pukāre || 1 ||
āratī kara mukha mangala gāye, tretānāma munīndra dharāye || 2 ||
kara āratī jaga pantha calāye, dvāpara men karuṇāmaya kahāye || 3 ||
āratī yuga-yuga bāndhe āśā, kalayuga kevala nāma prakāśā || 4 ||
cāron yuga dhare pragaṭa śarīrā, āratī gāven bandichoḍa kabīra || 5 ||

āratī – 6

kaise main ārati karaun tumhārī, mahāmalina sāheba deha hamārī || ṭeka ||
chūtahin se upaje sansārā, main chutiyā guṇa gāūn tumhārā || 1 ||
jharanā-jhare daśo-diśi•dvārā, kaise main āun sāheba nikaṭa tumhārā || 2 ||
jo prabhu deha agra kī dehi, taba hama pāyaba sāheba nāma sanehī || 3 ||
malayāgiri para base bhujangā, viṣa amṛta rahe ekai sangā || 4 ||
tinukā ṭoḍi diyo paravānā, taba pāye sāheba pada nirvānā || 5 ||
dhani dharmadāsa kabīra balagāje, guru pratāpa se āratī sāje || 6 ||

ārati – 7

guru jī kī āratī, utāro mana lagāya ke |
prema se āratī utāro, mana lagāya ke || ṭeka ||
pāna aura phūla se, āratī sajāyale || x 2 || guru jī kī āratī ....
prema kā dīyā hai, prema kī bātī || x 2 || guru jī kī āratī ....
āratī karo, sataguru sāheba kī || x 2 || guru jī kī āratī ....
sāheba kabīra, saba ghaṭa māhīn || x 2 || guru ji kī āratī ...
subaha aura śama, saheba ke guṇa gāvo || x 2 || guru ji kī āratī ..
śvāsa-śvāsa men, sāheba jī kā nāma lo || x 2 || guru jī kī āratī ...
caukā lagāya ke, guru āsana baiṭhāya ke || x 2 || guru jī kī āratī ...
āratī kī mahimā, kahān lagi varṇaun || x 2 || guru jī kī āratī ...
ṣāheba kabīra jī kī āratī utāro || x 2 || guru jī kī āratī ...

|| Satyanam ||

With Best Compliments

D.H. Sindou & Co. Ltd

offer courses and treatment

on MASSAGE

Contact:

Mr Dharamdass Baddu

Tel: 686 3209

Mr Harry Jugguah

Tel: 566 3066

भजन

होशियार रहो यह नगरी में, एक दिन लुटेरा आयेगा ।।टेक।।

ना तीर-तोप बरछी भाले, नाहीं बन्दूक चलावेगा ।
कोई लखे नहीं आवत जावत, वो घर में धूम मचावेगा ।।१।।

ना गढ़ तोड़े ना गढ़ फोड़े, नाहीं कछु रूप दिखावेगा ।
कुछ काम नहीं है नगरी से, तुझको पकड़ ले जावेगा ।।२।।

फरियाद सुनेगा नहीं तेरी, नहीं तुझको कोई बचावेगा ।
ये लोग कुटुम्ब, परिवार सभी तेरा कोई भी काम न आवेगा ।।३।।

धन धाम सम्पत्ति सुख वैभव, ये सभी त्याग तू जावेगा ।
नहि लगे पता कहीं पर तेरा, कोई खोजी भी खोज न पावेगा ।।४।।

कोई ऐसा संत विवेकी है, जो हरिगुण आय सुनावेगा ।
कहँई कबीर सुन भाई साधू, अरे खोल किवाड़ी जावेगा ।।५।।

bhajana

hośiyāra raho yaha nagarī men, eka dina luṭerā āyegā || ṭeka ||

nā tīra-topa barachī bhāle, nāhīn bandūka calāvegā |
koī lakhe nahīn āvata jāvata, vo ghara men dhūma macāvegā || 1 ||

nā gaḍha toḍe nā gaḍa phoḍe, nāhīn kachu rūpa dikhāvegā |
kucha kāma nahīn hai nagarī se, tujhako pakaḍa le jāvegā || 2 ||

phariyāda sunegā nahīn terī, nahīn tujhako koī bacāvegā |
ye loga kuṭumba, parivāra sabhī terā koī bhī kāma na āvegā || 3 ||

dhana dhāma sampatti sukha vaibhava, ye sabhī tyāga tū jāvegā |
nahin loga patā kahīn para terā, koī khojī bhī khoja na pāvegā || 4 ||

koī esā santa vivekī hai, jo hariguṇa āya sunāvegā |
kahan ī kabīra suna bhāī sādhū, are khola kivāḍī jāvegā || 5 ||